E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -12 अंक - 111 | प्रयागराज, शनिवार 11 जुलाई, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

ईरान से अभी दो दो हाथ फिर करना चाहता है इजराइल, ट्रम्प की मंजूरी का इंतजार, यूएस के साथ कार्रवाई को तैयार

तेहरान/वॉशिंगटन डीसी। अमेरिका और ईरान में बढ़ते तनाव के बीच इजराइल फिर से हमला करने को तैयार है। इजराइली मीडिया कान की रिपोर्ट के मुताबिक, इजराइल अमेरिका के साथ मिलकर ईरान पर दोबारा हमला करना चाहता है, लेकिन वह राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की मंजूरी का इंतजार कर रहा है।रिपोर्ट में कहा गया है कि इजराइली अधिकारियों को उम्मीद है कि अमेरिका और ईरान के बीच अगले कुछ दिनों तक हमले जारी रह सकते हैं। वहीं, न्यूयॉर्क पोस्ट ने यरुशलम के एक सूत्र के हवाले से लिखा कि जरूरत पड़ी तो इजराइल फिर से ईरान पर हमला करेगा। हालांकि इजराइल नहीं चाहता कि उसके लोगों को दोबारा बंकरों में जाना पड़े, लेकिन वह ईरान में हो रही घटनाओं पर चुप भी नहीं रह सकता। पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्सः- अमेरिका ने बुशहर परमाणु ठिकाने के पास हमला कियाः ईरान के एक अधिकारी ने बताया कि अमेरिका ने बुशहर परमाणु ठिकाने को निशाना बनाते हुए हवाई हमला किया। हालांकि फैसिलिटी को कोई नुकसान नहीं पहुंचा। ईरान ने बहरीन, कुवैत और जॉर्डन में अमेरिकी ठिकानों पर मिसाइलें दागीं, ईरान ने अमेरिका के हमलो के बाद जवाबी कार्रवाई करते हुए बहरीन, कुवैत और जॉर्डन में अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर मिसाइलें दागीं। हालांकि, इन देशों ने कई मिसाइलों और ड्रोन को मार गिराने का दावा किया है। अमेरिका ने ईरान में चीन-रूस से जुड़े पुल पर हमला कियाः ईरान ने दावा किया है कि अमेरिका ने उत्तरी ईरान में चीन और रूस से जुड़े एक रणनीतिक रेलवे पुल पर क्रूज मिसाइल से हमला किया। ईरान ने इसे युद्ध अपराध बताया। होर्मुज स्ट्रेट से तेल टैंकरों की आवाजाही लगभग ठपः रॉयटर्स के मुताबिक, अमेरिका-ईरान के बीच तनाव दोबारा बढ़ने के बाद होर्मुज स्ट्रेट में जहाजों की आवाजाही गुरुवार को ठप रही। इससे वैश्विक तेल सप्लाई को लेकर चिंता बढ़ी और कच्चे तेल की कीमतों में करीब 1फीसदी की बढ़ोतरी हुई। ईरान ने एक रात में 1 करोड़ बैरल कच्चा तेल भेजाः अल जजीरा के मुताबिक, ईरान ने एक ही रात में कम से कम 1 करोड़ बैरल कच्चा तेल और फ्यूल ऑयल निर्यात के लिए भेज दिया। अमेरिका की नौसैनिक नाकाबंदी फिर से लागू होने की आशंका के चलते यह कदम उठाया गया।

ईरानी सरकारी मीडिया ने दावा किया है कि पूर्व सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई के अंतिम संस्कार और श्रद्धांजलि कार्यक्रमों में 4.1 से 4.3 करोड़ लोग शामिल हुए। प्रेस टीवी ने इसे दुनिया का अब तक का सबसे बड़ा अंतिम यात्रा जुलूस बताया है। पूर्व अमेरिकी अधिकारी बोलेः-होर्मुज पर ईरान की काट नहीं ढूंढ पा रहा यूएस-पूर्व अमेरिकी मरीन अधिकारी डैन ग्रेजियर का कहना है कि होर्मुज स्ट्रेट पर ईरान की रणनीति की काट अमेरिका अब तक नहीं ढूंढ पाया है। वहीं अमेरिका ने कहा है कि वह अब भी ईरान के साथ बातचीत के जरिए समाधान निकालने के लिए प्रतिबद्ध है। अमेरिकी अधिकारियों के मुताबिक,दोनों देशों के बीच तकनीकी स्तर की वार्ता जारी है और क्षेत्रीय मध्यस्थ बातचीत को पटरी पर बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं।

भारत को यूरेनियम सप्लाई करेगा ऑस्ट्रेलिया, परमाणु ऊर्जा और हथियारों के लिए जरूरी, ऑस्ट्रेलियन पीएम से बोले मोदी -'हम आपसे सीख रहे'

मेलबर्न। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच गुरुवार को यूरेनियम डील पर मुहर लग गई है। मेलबर्न में पीएम मोदी और ऑस्ट्रेलियाई पीएम एंथनी अल्बनीज ने मीटिंग के बाद जॉइंट प्रेस कॉन्फ्रेंस में रक्षा, व्यापार, ऊर्जा, स्पेस और महत्वपूर्ण खनिज (क्रिटिकल मिनरल्स) समेत कई क्षेत्र में समझौतों की घोषणा की।मोदी ने कहा- भारत और ऑस्ट्रेलिया मिलकर क्रिटिकल मिनरल्स कॉरिडोर भी विकसित करेंगे। कोकोस (कीलिंग) द्वीप पर स्पेस ट्रैकिंग टर्मिनल बनाया जाएगा, जिससे भारत के गगनयान मिशन को मदद मिलेगी। मोदी ने 16 साल के बच्चों को सोशल मीडिया बैन करने के मामले में ऑस्ट्रेलिया की तारीफ की। उन्होंने कहा कि भारत ऑस्ट्रेलिया के कानून और बच्चों के लिए एक सुरक्षित ऑनलाइन माहौल बनाने के उसके तरीके से बहुत कुछ सीख रहा है।

इसके बाद मेलबर्न में 30 हजार भारतीयों को संबोधित किया। मोदी बोले- दोनों देशों का रिश्ता क्रिकेट जैसाः-भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच वार्ता के बाद दोनों पीएम मोदी और पीएम अल्बनीज ने संयुक्त बयान जारी किया। **आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

उत्तराखंड में लैंडस्लाइड से हजारों लोग फंसे,यूपी में बारिश से कई मौतें, दो दिन बाद मानसून दें सकता हैं कुछ राहत

जयपुर/लखनऊ। मानसून ने गुरुवार को पूरे देश को कवर कर लिया। इसे पूरे देश को कवर करने में 38 दिन लगते हैं, लेकिन इस बार 36 दिन में ही कवर कर लिया। हालांकि, मौसम विभाग के मुताबिक दो दिन बाद मानसून की रफ्तार धीमी पड़ सकती है। उत्तराखंड के उत्तरकाशी में स्यानाचट्टी के पास यमुनोत्री हाईवे और नालूपानी के पास गंगोत्री हाईवे लैंडस्लाइड से बंद हैं। यमुनोत्री मार्ग बंद होने से करीब 1000 यात्री फंसे हैं। 10 जिलों में बारिश के कारण आज स्कूलों की छुट्टी घोषित कर दी गई। पिथौरागढ़ में आदि कैलाश मार्ग चट्टानें गिरने से बंद है। हरिद्वार में सड़कों पर 3-4 फीट पानी भर गया। उत्तर प्रदेश के 69 शहरों में गुरुवार को बारिश हुई। बारिश की अलग-अलग घटनाओं में 10 लोगों की मौत हो गई। बुलंदशहर में मस्जिद की पुरानी दीवार गिरने से एक ही परिवार के 2 लोगों की मौत हो गई। हरदोई में 2 बहनें नदी में बह गईं। राजस्थान के धौलपुर में बारिश के चलते मकान ढह गया और 6 लोग मलबे में दब गए। अजमेर के किशनगढ़ में भी कच्चा मकान ढहने से माता-पिता और बच्चा दब गया। राज्य में 6 ट्रेनें कैंसिल हुई हैं। कई ट्रेनें लेट भी हैं।

अमेरिका में एच-1बी वीजा के नियम हो सकते हैं सख्त, विश्वविद्यालयों की छूट सीमित हो सकती है

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिका का ट्रम्प प्रशासन नए इमिग्रेशन नियमों की तैयारी कर रहा है, जिससे एच-1बी वीजा, रोजगार आधारित ग्रीन कार्ड और छात्र वीसा की प्रक्रिया पहले से अधिक सख्त हो सकती है। प्रस्तावित बदलाव लागू होने पर भारतीय पेशेवरों, छात्रों और अमेरिकी कंपनियों के लिए नियमों का पालन करना अधिक कठिन और महंगा हो सकता है। ये प्रस्ताव अमेरिकी गृह सुरक्षा विभाग, श्रम विभाग और विदेश विभाग के एकीकृत रेगुलेटरी एजेंडा में शामिल हैं। इसके लिए अगस्त में बदलाव उपायों में बदलाव प्रस्तावित हैं। छात्र वीसाः प्रस्ताव के तहत विदेशी छात्रों के लिए मौजूदा 'ड्यूरेशन ऑफ स्टेटस' व्यवस्था खत्म कर निश्चित अवधि का प्रवास तय किया जा सकता है। जयशंकर ने भी उठाया था मुद्दाः-विदेश मंत्री एस जयशंकर ने इसी साल मई में यह मामला अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो के सामने उठाया था। रूबियो ने माना था कि नए इमिग्रेशन सिस्टम में बदलाव के दौरान कुछ दिक्कतें और तनाव हो सकते हैं। हालांकि, रूबियो ने कहा था कि अमेरिका इमिग्रेशन सिस्टम को ज्यादा प्रभावी बनाने की कोशिश कर रहा है और लंबे समय में इसका फायदा सभी पक्षों को मिलेगा। रूबियो ने यह भी कहा था कि यह कदम खासतौर पर भारत को निशाना बनाकर नहीं उठाया गया। उनके मुताबिक अमेरिका पिछले कुछ सालों में बड़े पैमाने पर अवैध प्रवासियों की समस्या से जूझ रहा है। 2 करोड़ से ज्यादा लोग गैरकानूनी तरीके से अमेरिका में दाखिल हुए और उसी चुनौती से निपटने के लिए यह बदलाव किए जा रहे हैं।

का प्रस्ताव आ सकता है। एच-1बीः विश्वविद्यालयों और कुछ शोध संस्थानों को मिलने वाली एच-1बी कैप छूट सीमित की जा सकती है। कई ऐसे प्रस्ताव हैं जिनसे कंपनियों की लागत बढ़ सकती है। ग्रीन कार्डः एच-1बी व ग्रीन कार्ड के लिए लागू न्यूनतम वेतन बढ़ाने का प्रस्ताव है। साथ ही भर्ती नियमों, अमेरिकी कर्मचारियों की छंटनी से जुड़े प्रावधानों और भेदभाव-रोधी

अमेरिका ने चीन-रूस से जुड़े पुल पर दागी मिसाइल, 48 घंटो में 170 ठिकानों पर हमला

तेहरान/वॉशिंगटन डीसी। ईरान की इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (आईआरजीसी) ने अमेरिका को चेतावनी दी है कि अगर होर्मुज स्ट्रेट में दखल दिया तो करारा जवाब दिया जाएगा। ईरानी न्यूज एजेंसी इरना के मुताबिक, आईआरजीसी ने कहा कि अमेरिका ने हमला जारी रखा तो होर्मुज सामान्य नहीं हो पाएगा और कई देशों को आर्थिक नुकसान होगा। दूसरी ओर, ईरान की फार्स न्यूज एजेंसी ने बताया कि अमेरिका ने उत्तरी ईरान में चीन और रूस से जुड़े एक रणनीतिक रेलवे पुल पर क्रूज मिसाइल से हमला किया। अमेरिका ने पिछले 2 दिनों में ईरान के 170 से ज्यादा सैन्य ठिकानों पर मिसाइल और ड्रोन दागे हैं। अमेरिकी सेंट्रल पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्सः- अमेरिका ने ईरान के 80 ठिकानों पर हमले किएः अमेरिकी सेना ने

मंगलवार देर रात ईरान के 80 से ज्यादा सैन्य ठिकानों पर एयरस्ट्राइक की। अमेरिका ने बताया कि यह ईरान के होर्मुज में जहाजों पर हमले के जवाब में किया गया है। ट्रम्प बोले- ईरान से सीजफायर खत्मः अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने नाटो को निशाना बनायाः ईरान की रिवोल्यूशनरी गार्ड्स ने दावा किया कि उसने बहरीन और कुवैत में 85 अमेरिकी सैन्य ठिकानों को मिसाइल और ड्रोन से निशाना बनाया। इसमें अमेरिकी फिफ्थ फ्लीट मुख्यालय और अली अल-सलेम एयर बेस भी शामिल बताए गए। ईरान बोला- अमेरिका से आगे की बातचीत नहीं होगीः ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा कि धमकियों के माहौल में अमेरिका से कोई बातचीत या समझौता नहीं होगा, पहले अमेरिका को पुराने समझौतों का सम्मान करना होगा। हमलों के बाद होर्मुज से भारतीय झंडे वाला जहाज वापस लौटाः सीएनएन के मुताबिक, होर्मुज में बढ़ते

ईरान बोला- होर्मुज में दखल दिया तो मुंह तोड़ जवाब देंगे

कमांड (सेंटकॉम) के मुताबिक, हमलों में एयर डिफेंस सिस्टम, ड्रोन और मिसाइल भंडार, सैन्य स्पीड बोट और होर्मुज स्ट्रेट के पास तटीय इलाकों में मौजूद सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया गया। समिट के दौरान कहा कि ईरान वे साथ हुआ सीजफायर समझौता अब खत्म हो चुका है और अब वह ईरान से कोई डील नहीं करना चाहते। ईरान बोला- बहरीन और कुवैत में 85 ठिकानों तनाव के बाद कुवैत का 20 लाख बैरल कच्चा तेल लेकर जा रहा भारतीय झंडे वाला टैंकर 'लीला वादिनार' बुधवार को होर्मुज स्ट्रेट के पास ओमान के तट से वापस लौट गया।

चीन ने रॉकेट बूस्टर को समुद्र में सुरक्षित उतारा, पहली बार सफल टेस्ट

बीजिंग। चीन ने अंतरिक्ष तकनीक में बड़ी सफलता हासिल की है। उसने पहली बार रॉकेट के बूस्टर को समुद्र में सुरक्षित उतारने का सफल परीक्षण किया है। चीन ने शुक्रवार को लॉन्च मार्च-10 रॉकेट को दक्षिणी प्रांत हैनान से लॉन्च किया। उड़ान भरने के करीब 6 मिनट बाद बूस्टर मुख्य रॉकेट से अलग हुआ और नियंत्रित तरीके से समुद्र में बने एक प्लेटफॉर्म पर उतर गया। वहां लगे विशेष जाल (नेट) ने उसे सुरक्षित पकड़ लिया। चीन वे सरकारी मीडिया वे मुताबिक, किसी रॉकेट बूस्टर को इस तरह नियंत्रित तरीके से वापस लाने का यह देश का पहला सफल परीक्षण है। एक्सपर्ट्स के मुताबिक, अगर रॉकेट के बूस्टर को हर लॉन्च के बाद दोबारा इस्तेमाल किया जा सके, तो अंतरिक्ष मिशनों की लागत काफी कम होगी और लॉन्च की रफ्तार भी बढ़ेगी।

टीएमसी के 3 पूर्व राज्यसभा सांसद भाजपा में हुए शामिल, उपचुनाव में उम्मीदवार बनाया

नाराज होकर छोड़ा था ममता का साथ

कोलकाता। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के तीन पूर्व राज्यसभा सांसद सुष्मिता देव, सुखेंदु शेखर राय और प्रकाश चिक बराइक गुरुवार को भाजपा में शामिल हो गए। भाजपा ने तीनों को बंगाल की तीन राज्यसभा सीटों पर होने वाले उपचुनाव के लिए उम्मीदवार बनाया है। पश्चिम बंगाल के विधानसभा चुनाव में टीएमसी की हार के बाद तीनों नेताओं ने राज्यसभा की सदस्यता और टीएमसी से इस्तीफा दे दिया था। तीनों ने ममता से नाराजगी जताई थी और कहा था कि पार्टी मनमाने ढंग से चल रही है। सुखेंदु ने 8 जून, सुष्मिता ने 10 जून और प्रकाश ने 11 जून को रिजाइन दिया था। बंगाल की इन तीन राज्यसभा सीटों पर होने वाले उपचुनाव के लिए 24 जुलाई को वोटिंग और काउंटिंग होगी। 14 जुलाई तक नामांकन और नामांकन पत्रों की जांच 15 जुलाई को होगी। सुखेंदु रॉय बोले- आरजी कर केस में सवाल उठाने पर जान से मारने की धमकी मिलीः-सुखेंदु रॉय- आरजी कर रेप-मर्डर केस में सबूतों से छेड़छाड़ का मुद्दा उठाने के बाद मुझे जान से मारने और परिवार के अपहरण की धमकियां मिलने लगीं। पुलिस आयुक्त

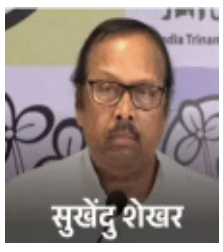

और अस्पताल के प्रिंसिपल से पूछताछ की मांग करने के बाद उन्हें लालबाजार पुलिस मुख्यालय भी बुलाया गया। खराब तबीयत के बावजूद उनकी बात नहीं सुनी गई, जिसके बाद उन्हें हाईकोर्ट जाना पड़ा। सुष्मिता देव- पश्चिम बंगाल, असम, ओडिशा और त्रिपुरा में बीजेपी की जीत से पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व पर लोगों का भरोसा दिखता है। असम में लगातार तीसरी बार बीजेपी की सरकार बनना इसकी बड़ी मिसाल है। महुआ मोइत्रा को कोई दूसरी पार्टी अपने साथ नहीं लेना चाहती, इसलिए वह टीएमसी में हैं। सौगत रॉय बोले- टीएमसी को कोई फर्क नहीं पड़ेगा-टीएमसी सांसद सौगत रॉय- तीनों नेता पहले से ही बीजेपी के साथ थे। अब अपनी सीट बचाने के लिए बीजेपी ने उन्हें मौका दिया है। इससे टीएमसी को कोई नुकसान नहीं होगा। बीजेपी को भी इससे कोई खास फायदा नहीं मिलेगा, क्योंकि दल बदलने वाले नेताओं की ज्यादा अहमियत नहीं होती।

शेख हसीना बोलीं- दिसंबर में बांग्लादेश लौटकर कोर्ट में सरेंडर करूंगी, हत्या हो जाए तो भी मंजूर,मरना देश की मिट्टी पर हैं

नई दिल्ली। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना ने कहा है कि वह दिसंबर में भारत से बांग्लादेश देश लौटेंगी और कोर्ट में सरेंडर करेंगी। उन्होंने कहा कि उनके साथ अवामी लीग के कई सीनियर नेता भी बांग्लादेश लौटकर आत्मसमर्पण करेंगे। हसीना ने कहा कि अवामी लीग के नेताओं और कार्यकर्ताओं पर लगातार कार्रवाई हो रही है। उनके मुताबिक, लगभग सभी बड़े नेताओं और कार्यकर्ताओं पर मुकदमे दर्ज किए गए हैं और कई लोग छिपकर रहने को मजबूर हैं। हालांकि, उन्होंने वापसी की सटीक तारीख नहीं बताई। रॉयटर्स को दिए इंटरव्यू में उन्होंने कहाः- 'वे मुझे गिरफ्तार कर सकते हैं, मेरी हत्या भी कर सकते हैं, लेकिन मुझे लौटना ही होगा। अगर मौत भी आए, तो मैं अपने देश की मिट्टी पर मरना चाहती हूं, जहां मेरे माता-पिता

दफन' हसीना 2024 में सरकार विरोधी आंदोलन वे बाद बांग्लादेश छोड़कर भारत आ गई थीं। इसवे बाद उन्हें छात्र आंदोलन पर कार्रवाई से जुड़े मामले में मौत की सजा सुनाई गई। वह इन आरोपों से इनकार करती रही हैं। शेख हसीना ने कहा कि उन्हें जेल जाने का डर नहीं है, क्योंकि वह पहले भी कई बार गिरफ्तार हो चुकी हैं। उन्होंने कहा कि सत्ता में लंबे समय तक रहने वाली किसी भी सरकार से गलतियां हो सकती हैं, लेकिन उसका फैसला अदालत नहीं, जनता को करना चाहिए। उन्होंने कहा, 'अगर हमारी सरकार से गलतियां हुई हैं, तो जनता फैसला करेगी।' रॉयटर्स के मुताबिक, संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में 2024 के छात्र आंदोलन पर कार्रवाई में करीब 1,400 लोगों की मौत होने की बात कही गई है। इसी मामले में शेख हसीना को अनुपस्थिति में मौत की सजा सुनाई गई थी। हसीना ने कहा कि उन्हें भरोसा है कि अदालत की सुनवाई शुरू होने पर सच्चाई सामने आ जाएगी।

12फीसदी से ज्यादा अल्कोहल वाली दवा बिना प्रिस्क्रिप्शन नहीं मिलेगी, मेडिकल स्टोर्स को 3 साल का रिकॉर्ड रखना होगा

नयी दिल्ली। केंद्र सरकार ने 12फीसदी से ज्यादा अल्कोहल मिक्स दवाओं की खुली बिक्री पर रोक लगा दी है। ये नियम 30 मिलीलीटर से ज्यादा बड़ी बोतल के लिए है। अब ये दवाएं डॉक्टर के प्रिस्क्रिप्शन के बिना खरीदी या बेची नहीं जा सकेंगी। दवाओं के गलत इस्तेमाल को रोकने के लिए सरकार ने ड्रग्स रूल्स, 1945 में यह बदलाव किया है। मेडिकल स्टोर्स के लिए भी खास निर्देश हैं। अब मेडिकल स्टोर्स को इन दवाओं की बिक्री का पूरा रिकॉर्ड एक अलग रजिस्टर में रखना होगा। इस फैसले का आम मरीजों, मेडिकल स्टोर्स और पब्लिक हेल्थ पर क्या असर पड़ेगा? आप सोच रहे होंगे आखिर ऐसा फैसला क्यों आया तो बता दें दरअसल मार्केट में मिलने वाले कई कफ सिरप और टॉनिक में अल्कोहल की मात्रा काफी ज्यादा होती है। बिना रोक-टोक या डॉक्टर की पर्ची के मिलने से कई लोग इनका इस्तेमाल नशे के लिए करने लगे थे। इसी दुरुपयोग को रोकने और दवाओं की बिक्री की सख्ती से निगरानी के लिए सरकार ने यह कदम उठाया है। : दवाओं के गलत इस्तेमाल की बढ़ती चिंताओं को देखते हुए सरकार की रेगुलेटरी कमेटियों- ड्रग्स कंसल्टेटिव कमेटी और ड्रग्स टेक्निकल एडवाइजरी बोर्ड ने इस पर समीक्षा की थी। इन कमेटियों की सिफारिशों के बाद ही सरकार ने कानून में यह संशोधन लागू किया है। शेड्यूल एच1 के तहत आने के बाद अब फार्मेसी या मेडिकल स्टोर्स को ये 3 मुख्य काम करने होंगेः- दवा केवल रजिस्टर्ड डॉक्टर के पर्चे पर दी जाएगी। हर एक बिक्री की डिटेल (मरीज का नाम, दवा की मात्रा, डॉक्टर का नाम) एक रजिस्टर में दर्ज करनी होगी। इन पर्चों और बिक्री के रिकॉर्ड को कम से कम 3 साल तक सुरक्षित रखना होगा, ताकि ड्रग रेगुलेटर्स कभी भी इसकी जांच कर सकें।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

10 दिवसीय प्रशिक्षण एवं टूलकिट प्राप्त करने हेतु 2026-27 में ऑनलाइन आवेदन करने की अन्तिम तिथि 25 जुलाई

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित एक जनपद एक उत्पाद प्रशिक्षण एवं टूलकिट योजना के अन्तर्गत मूँज उत्पाद तथा खाद्य प्रसंस्करण (1 - बेकरी 2- अचार चटनी एवं मुरब्बा) तथा विश्वकर्मा श्रम सममान योजना के अन्तर्गत समस्त ट्रेडों (बढ़ई, नाई, दर्जी, कुम्हार, लोहार, सुनार, टोकरी बुनकर, राज मिस्त्री, हलवाई, मोची एवं धोवी) में 10 दिवसीय प्रशिक्षण एवं टूलकिट प्राप्त करने हेतु वित्तीय वर्ष 2026-27 में ऑनलाइन आवेदन करने की अन्तिम तिथि 25.07.2026 है। अतः पोर्टल www.msme.up.gov.in पर समस्त प्रपत्रों (आधार कार्ड, बैंक पासबुक, शैक्षिक प्रमाण पत्र, जाति प्रमाणपत्र, निवास प्रमाण पत्र, अनुभव प्रमाण पत्र) सहित ऑनलाइन आवेदन करने का कष्ट करें। अधिक जानकारी हेतु कार्यालय उपायुक्त उद्योग, जिला उद्योग प्रोत्साहन तथा उद्यमिता विकास केन्द्र, 05 नया कटरा, प्रयागराज (फोन नं0 0532-2640455) से सम्पर्क करने का कष्ट करें।

डीएम के निर्देश पर जनपद में अंश निर्धारण (आरटीके) कार्य में तेजी, 92.07 प्रतिशत कार्य पूर्ण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका के निर्देशानुसार जनपद में अंश निर्धारण (आरटीके) कार्य निर्धारित समयसीमा के अंतर्गत तेजी से कराया जा रहा है। राजस्व विभाग द्वारा प्राप्त प्रगति रिपोर्ट के अनुसार जनपद में कुल 15,78,414 अंशों के सापेक्ष 14,53,301 अंशों का आर0टी0के0 कार्य पूर्ण कर लिया गया है, जिससे जनपद की कुल प्रगति 92.07 प्रतिशत हो गई है। जिलाधिकारी के निर्देशन में सभी तहसीलों में प्रतिदिन लक्ष्य के अनुरूप कार्य कराया जा रहा है। दिनांक 09 जुलाई 2026 को 150 नए अंशों का निर्धारण कार्य संपन्न किया गया, जिससे जनपद की प्रगति में और वृद्धि हुई है। तहसीलवार प्रगति में सलोन तहसील 99.92 प्रतिशत कार्य पूर्ण कर प्रथम स्थान पर है। इसके अतिरिक्त ऊंचाहार में 93.48 प्रतिशत, महाराजगंज में 91.17 प्रतिशत, लालगंज में 90.15 प्रतिशत, डलमऊ में 88.44 प्रतिशत तथा रायबरेली सदर में 88.30 प्रतिशत कार्य पूर्ण किया जा चुका है। जिलाधिकारी ने संबंधित उपजिलाधिकारियों एवं राजस्व अधिकारियों को निर्देशित किया है कि शेष कार्यों को भी पूरी गुणवत्ता एवं समयबद्धता के साथ पूर्ण कराया जाए। उन्होंने कहा कि अंश निर्धारण कार्य राजस्व अभिलेखों को अद्यतन एवं पारदर्शी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण है, इसलिए सभी अधिकारी आपसी समन्वय से कार्य करते हुए शत-प्रतिशत लक्ष्य शीघ्र प्राप्त करना सुनिश्चित करें।

डीएम की अध्यक्षता में उ0प्र0 राज्य राजधानी क्षेत्र (लखनऊ) के जीआईएस आधारित रीजनल प्लान तैयार किए जाने हेतु बैठक सम्पन्न

जनपद के सुनियोजित एवं संतुलित विकास की दिशा में महत्वपूर्ण पहल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। गुरूवार को जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में उत्तर प्रदेश राज्य राजधानी क्षेत्र हेतु जीआईएस आधारित क्षेत्रीय महायोजना तैयार किए जाने हेतु बेसमैप एवं इग्जीस्टिंग लैंड्यूज तथा प्रस्तावित परियोजना से संबंधित प्लान तैयार किए जाने के संबंध में एक महत्वपूर्ण बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जनपद के दीर्घकालिक, समावेशी एवं सतत विकास के दृष्टिकोण से विभिन्न विभागों द्वारा उपलब्ध कराए जाने वाले आंकड़ों एवं भौगोलिक सूचनाओं पर विस्तृत चर्चा की गई। बैठक में शासन द्वारा चयनित कंसल्टेंट द्वारा प्रस्तुत डिलीवेरेबल-1 एवं डिलीवेरेबल-2, डिलीवेरेबल-3, डिलीवेरेबल-4 के सम्बन्ध में प्रस्तुतीकरण किया गया, जिसके सम्बन्ध में संबंधित विभागों द्वारा सुझाव दिए गए।जिलाधिकारी ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 2051 को दृष्टिगत रखते हुए प्रदेश के सुनियोजित विकास के लिए जीआईएस आधारित रीजनल प्लान तैयार किया जा रहा है। यह योजना भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों के संतुलित विकास, आधारभूत संरचना के विस्तार, परिवहन नेटवर्क, औद्योगिक विकास, पर्यावरण संरक्षण, जल संसाधन प्रबंधन, आवासीय आवश्यकताओं तथा सामाजिक सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि अपने-अपने विभागों से संबंधित अद्यतन एवं प्रमाणिक आंकड़ों को निर्धारित प्रारूप में समयबद्ध ढंग से उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें, जिससे जनपद की वास्तविक आवश्यकताओं एवं संभावनाओं के अनुरूप प्रभावी रीजनल प्लान तैयार किया जा सके। उन्होंने कहा कि योजना निर्माण में भौगोलिक परिस्थितियों, जनसंख्या वृद्धि, भूमि उपयोग, प्राकृतिक संसाधनों एवं विकास की संभावनाओं का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाएगा। बैठक में जीआईएस तकनीक के माध्यम से जनपद के विभिन्न क्षेत्रों की वर्तमान स्थिति, उपलब्ध संसाधनों, विकास परियोजनाओं तथा भविष्य की आवश्यकताओं का डिजिटल मैपिंग एवं विश्लेषण किए जाने पर भी विचार-विमर्श किया गया। अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि विभागीय सूचनाओं का डिजिटलीकरण कर उन्हें निर्धारित पोर्टल पर अपलोड किया जाए, जिससे योजना निर्माण की प्रक्रिया को गति मिल सके। जिलाधिकारी ने कहा कि यू.पी. एस.सी.आर.-2051 के अंतर्गत तैयार किया जाने वाला रीजनल प्लान जनपद के समग्र विकास का रोडमैप सिद्ध होगा, जिससे आने वाले वर्षों में आधारभूत सुविधाओं के विकास, निवेश को प्रोत्साहन, रोजगार सृजन तथा नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार के लिए प्रभावी रणनीति तैयार की जा सकेगी। बैठक में संबंधित विभागों के अधिकारियों ने अपने विभागों से संबंधित उपलब्ध आंकड़ों एवं प्रस्तावित कार्ययोजनाओं की जानकारी प्रस्तुत की तथा योजना निर्माण में अपेक्षित सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया। बैठक में अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) सहदेव मिश्र, अपर जिलाधिकारी (न्यायिक)/सचिव रायबरेली विकास प्राधिकरण विशाल यादव, समस्त उप जिलाधिकारी सहित संबंधित विभागों के अधिकारी, अर्बन प्लानर कीर्ति टंडन, टीम लीडर मुजीब रहमान उपस्थित रहे।

कन्या सुमंगला योजना के शत-प्रतिशत लाभार्थियों को मिले लाभ- डीएम, डीएम ने महिला कल्याण विभाग की योजनाओं की समीक्षा में दिए प्रभावी क्रियान्वयन के निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। गुरूवार को जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में महिला कल्याण विभाग द्वारा संचालित विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में विभागीय योजनाओं की प्रगति, लाभार्थियों की स्थिति एवं योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन की विस्तृत समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने विशेष रूप से मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि जिला अस्पताल (महिला), सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (सीएचसी) तथा अन्य स्वास्थ्य संस्थानों में जन्म लेने वाली शत-प्रतिशत पात्र नवजात बालिकाओं का कन्या सुमंगला योजना के अंतर्गत आवेदन अनिवार्य रूप से भरवाया जाए तथा उन्हें समयबद्ध रूप से योजना का लाभ दिलाना सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि पात्रता के अभाव में कोई भी बालिका योजना के लाभ से वंचित नहीं रहनी चाहिए। जिलाधिकारी ने महिला कल्याण विभाग एवं स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को आपसी समन्वय स्थापित कर योजना के प्रति व्यापक जनजागरूकता अभियान संचालित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि नवजात बालिकाओं के अभिभावकों को अस्पताल स्तर पर ही योजना की जानकारी उपलब्ध कराई जाए तथा आवेदन प्रक्रिया को सरल एवं सुगम बनाया जाए, जिससे अधिक से अधिक पात्र परिवारों को इसका लाभ मिल सके। उन्होंने विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी योजनाओं की नियमित मॉनिटरिंग की जाए तथा आवेदन, सत्यापन एवं स्वीकृति की प्रक्रिया में अनावश्यक विलंब न होने पाए। योजनाओं के क्रियान्वयन में गुणवत्ता एवं पारदर्शिता बनाए रखते हुए निर्धारित समय-सीमा के भीतर सभी लक्ष्य पूर्ण किए जाएं। बैठक में महिला कल्याण विभाग द्वारा संचालित निराश्रित पेंशन, फैमिली आईडी, सहित अन्य योजनाओं की भी समीक्षा की गई।जिलाधिकारी ने कहा कि प्रत्येक पात्र लाभार्थी तक योजनाओं का लाभ पहुंचाना सभी संबंधित विभागों की जिम्मेदारी है, इसके लिए विभागीय अधिकारी सक्रियता एवं संवेदनशीलता के साथ कार्य करें। बैठक में अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ0 अम्बिका प्रसाद, जिला प्रोबेशन अधिकारी शक्ति त्रिपाठी, जिला कार्यक्रम अधिकारी सुरेन्द्र कुमार तथा महिला कल्याण विभाग एवं संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

सफलता की उड़ान

गांव का बेटा सत्यम बना असिस्टेंट लोको पायलट, संघर्ष और संकल्प ने दिलाई मंजिल

आरआरबी बिलासपुर की भर्ती प्रक्रिया में चयन, गोठांव गांव में खुशी की लहर,- सफलता संयोग नहीं, रोज की मेहनत और हार न मानने के जज्बे का परिणामः सत्यम सिंह

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। अक्सर माना जाता है कि बड़े शहरों के युवाओं के लिए ही बड़ी नौकरियों के रास्ते आसान होते हैं, लेकिन विकास खंड राही के ग्राम गोठांव के युवा सत्यम सिंह ने अपनी मेहनत से इस धारणा को गलत साबित कर दिया। सीमित संसाधनों और ग्रामीण परिवेश में रहकर उन्होंने रेलवे भर्ती बोर्ड (आरआरबी) बिलासपुर की भर्ती प्रक्रिया में असिस्टेंट लोको पायलट (एएलपी) पद पर चयन हासिल किया। उनकी सफलता से परिवार ही नहीं, पूरा गांव गौरवान्वित है। सत्यम के चयन की सूचना मिलते ही गांव में खुशी का माहौल बन गया। परिजन, रिश्तेदार और ग्रामीण उन्हें बधाई देने पहुंचने लगे। लोगों का कहना है कि सत्यम ने साबित कर दिया कि मजबूत इरादों के आगे अभाव कभी बाधा नहीं बनते। सत्यम बताते हैं कि यह सफलता किसी एक परीक्षा की नहीं, बल्कि वर्षों के धैर्य, अनुशासन और निरंतर संघर्ष का परिणाम है। तैयारी के दौरान कई बार निराशा मिली और आत्मविश्वास भी डगमगाया, लेकिन उन्होंने लक्ष्य से कभी समझौता नहीं किया। उनका कहना है, 'जब भी मनोबल कमजोर पड़ा, परिवार के विश्वास, शिक्षकों के मार्गदर्शन और अपने सपनों ने आगे बढ़ने की नई ऊर्जा दी। सफलता एक दिन की उपलब्धि नहीं, बल्कि वर्षों की मेहनत, अनुशासन, निरंतरता और कठिन परिस्थितियों में भी हार न मानने के संकल्प का परिणाम होती है।' सत्यम की प्रारंभिक शिक्षा पंडित जालिपा प्रसाद सरस्वती विद्या मंदिर, जगतपुर से हुई। इसके बाद उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के देशबंधु कॉलेज से स्नातक की पढ़ाई की। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के दौरान उन्होंने ऑनलाइन अध्ययन, मॉक टेस्ट, नियमित रिवीजन और समय प्रबंधन को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाया। आरआरबी बिलासपुर की एएलपी भर्ती का विज्ञापन जनवरी 2024 में जारी हुआ था। नवंबर 2024 में प्रथम चरण की परीक्षा, वर्ष 2025 में मुख्य परीक्षा और सीबीएटी (साइको टेस्ट) के बाद एक अक्टूबर 2025 को परिणाम घोषित हुआ। मार्च 2026 में चिकित्सीय परीक्षण पूरा होने के बाद 23 जून को नियुक्ति प्रक्रिया संपन्न हुई। सत्यम जुलाई के तीसरे सप्ताह में भारतीय रेलवे में अपनी नई जिम्मेदारी संभालेंगे। सत्यम के पिता श्रीनारायण सिंह कहते हैं कि कठिन परिस्थितियों में भी बच्चों की शिक्षा में कोई कमी नहीं आने दी, जबकि माता सुधा सिंह ने हर कदम पर सत्यम का मनोबल बढ़ाया। दो भाइयों में बड़े सत्यम की इस उपलब्धि से छोटे भाई उत्तम सिंह भी उत्साहित हैं, जो आगे बीटेक करने की तैयारी कर रहे हैं। परिवार की तीनों बेटियां भी शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। युवाओं के लिए सत्यम का संदेश है कि मंजिल गांव या शहर देखकर नहीं मिलती, बल्कि मेहनत, धैर्य और सही दिशा में लगातार किए गए प्रयास सफलता का रास्ता बनाते हैं। गोठांव के इस युवा की सफलता जिले के उन हजारों विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा है, जो सीमित संसाधनों के बावजूद बड़े सपने देखने और उन्हें पूरा करने का साहस रखते हैं।

जनप्रतिनिधियों के सहयोग से रायबरेली विकास की नई ऊंचाइयों की ओर अग्रसर-दिनेश प्रताप सिंह

25 करोड़ रुपये की 150 विकास परियोजनाओं का हुआ लोकार्पण एवं शिलान्यास, जनसेवा एवं विकास कार्यों में दिए गए सकारात्मक योगदान की सराहना की, विकास परियोजनाओं के पूर्ण होने से जनपद के हजारों नागरिकों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध होगी -उद्यान मंत्री

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) उद्यान, कृषि विपणन, कृषि विदेश व्यापार एवं कृषि निर्यात उ0प्र0 दिनेश प्रताप सिंह की गरिमामयी उपस्थिति एवं मा0 अध्यक्ष जिला पंचायत रंजना चौधरी की अध्यक्षता में जिला पंचायत सभागार में जिला पंचायत की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जनपद के समग्र विकास, जनहितकारी योजनाओं की प्रगति तथा आगामी विकास कार्यों पर विस्तृत चर्चा करते हुए जनप्रतिनिधियों द्वारा महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए गए। बैठक को संबोधित करते हुए मा0 मंत्री दिनेश प्रताप सिंह ने जिला पंचायत के सभी निर्वाचित सदस्यों द्वारा अपने कार्यकाल के दौरान जनसेवा एवं विकास कार्यों में दिए गए सकारात्मक योगदान की सराहना की। उन्होंने कहा कि जनप्रतिनिधियों की सक्रिय सहभागिता से जनपद में विकास कार्यों को गति मिली है और आमजन को विभिन्न योजनाओं का लाभ समयबद्ध रूप से प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में जनप्रतिनिधियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरते हुए सभी सदस्यों ने अपने-अपने क्षेत्रों में विकास कार्यों को प्राथमिकता दी है। उन्होंने सभी सदस्यों के सफल एवं सम्मानजनक कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं देते हुए कहा कि उन्हें विश्वास है कि सभी जनप्रतिनिधि पुनः जनता का विश्वास प्राप्त कर निर्वाचित होकर जनसेवा के इस कार्य को आगे बढ़ाएंगे। अध्यक्ष जिला पंचायत रंजना चौधरी ने बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा कि जिला पंचायत सदैव जनहित एवं विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए कार्य करती रही है। उन्होंने सभी सदस्यों के सहयोग एवं सहभागिता के लिए आभार व्यक्त किया तथा भविष्य में भी जनपद के सर्वांगीण विकास के लिए इसी प्रकार समर्पित भाव से कार्य करने का आह्वान किया। बैठक के उपरान्त मंत्री जी द्वारा विधानसभा सदर व बछरावां की लगभग 25 करोड़ रुपये की लागत से तैयार एवं प्रस्तावित लगभग 150 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया गया। इन परियोजनाओं में विभिन्न क्षेत्रों में सड़क निर्माण एवं सुदृढ़ीकरण, संपर्क मार्ग, नाली निर्माण, सामुदायिक भवन, पेयजल, प्रकाश व्यवस्था तथा अन्य आधारभूत सुविधाओं से जुड़े विकास कार्य शामिल हैं। इस अवसर पर मा0 मंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार गांवों से लेकर शहरों तक आधारभूत सुविधाओं के विस्तार एवं गुणवत्तापूर्ण विकास के लिए प्रतिबद्ध है। इन विकास परियोजनाओं के पूर्ण होने से जनपद के हजारों नागरिकों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध होंगी तथा क्षेत्र के सामाजिक एवं आर्थिक विकास को नई गति मिलेगी। कार्यक्रम में अपर मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला पंचायत ओम प्रकाश सिंह सहित जिला पंचायत सदस्यगण, जनप्रतिनिधि, संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारी तथा बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

'नो पावर कट ज़ोन' होने के बावजूद अंधेरे में नौएडा, आखिर जिम्मेदार कौन?

एनसीएफ की कार्यकारी अध्यक्ष शालिनी सिंह ने मुख्य अभियंता के साथ की औपचारिक बैठक, सौंपा विस्तृत ज्ञापन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नौएडा। सामाजिक संस्था नौएडा सिटीजन फोरम (एनसीएफ) की कार्यकारी अध्यक्ष शालिनी सिंह ने यूपीपीसीएल/ पीवीवीएनएल के मुख्य अभियंता संजय कुमार जैन के साथ औपचारिक बैठक कर नौएडा में लगातार हो रही अघोषित बिजली कटौती, जर्जर विद्युत व्यवस्था, जनसुरक्षा से जुड़े गंभीर खतरों तथा विद्युत तंत्र में व्यापक सुधार की मांग को लेकर विस्तृत ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में कहा गया कि उत्तर प्रदेश की 'शो विंडो' तथा 'नो पावर कट ज़ोन' कहलाने वाला नौएडा पिछले काफी समय से बिजली संकट से जूझ रहा है। शहर के विभिन्न सैक्टरों, औद्योगिक क्षेत्रों, आवासीय सोसायटियों तथा ग्रामीण क्षेत्रों में अघोषित बिजली कटौती, बार-बार फॉल्ट, जर्जर एवं नीचे लटकते बिजली के तार, खुले ट्रांसफॉर्मर, करंट उतरते विद्युत पोल, रात्रिकालीन फॉल्ट के दौरान अधिकारियों की अनुपलब्धता अत्यंत गंभीर और चिंताजनक विषय है। शालिनी सिंह ने कहा कि डूब क्षेत्र में भी विद्युत सप्लाई नहीं है, यहां भी बड़ी संख्या में इंसानी आबादी रहती है और इनमें छोटे बच्चे, बुजुर्ग लोग भी बड़ी संख्या में निवास कर रहे हैं, यदि इन क्षेत्रों में इन लोगों को बसने दिया गया है तो इन्हें मूलभूत सुविधाओं से अलग रखना अमानवीय कृत्य है। यदि इन स्थानों को अब अवैध बताकर मूलभूत सुविधाओं से वंचित किया जा रहा है तो फिर जब यह क्षेत्र बस रहे थे तो स्थानीय प्रशासन या प्राधिकरण ने आँखें क्यों बंद रखी, यह कोई एक दिन में नहीं बसे सालों लगे इन्हें बसने में। बैठक के दौरान चर्चा में मुख्य अभियंता ने यह भी अवगत कराया कि वर्तमान में बिजली संकट का एक बड़ा कारण कई स्थानों पर ट्रांसफॉर्मरों एवं बिजलीघरों का वर्षा के पानी में डूब जाना है। ऐसी स्थिति में बिना सुरक्षा जांच के विद्युत आपूर्ति बहाल करना बड़े हादसे का कारण बन सकता है। इस संबंध में नौएडा प्राधिकरण को भी अलग से पत्र भेजकर जलभराव की समस्या के स्थायी समाधान की मांग की गई है। मुख्य अभियंता ने सभी मांगों पर प्राथमिकता के आधार पर कार्रवाई का आश्वासन देते हुए नागरिकों से विद्युत संबंधी शिकायतों के लिए हेल्पलाइन नंबर 9193301659 का अधिक से अधिक उपयोग करने का आग्रह किया। एनसीएफ ने नौएडा के लिए दीर्घकालिक विद्युत मास्टर प्लान तैयार करने, नए विद्युत उपकेंद्र स्थापित करने, शहर एवं ग्रामीण क्षेत्रों की जर्जर विद्युत लाइनों के प्रतिस्थापन, सभी खुले ट्रांसफॉर्मरों की सुरक्षा सुनिश्चित करने, शिकायतों के समयबद्ध निस्तारण, रात्रिकालीन आपातकालीन व्यवस्था को सुदृढ़ करने, सैक्टरों, सोसायटियों, औद्योगिक एवं ग्रामीण क्षेत्रों में निर्बाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने तथा अवैध बिजली आपूर्ति करने वाले तथाकथित बिजली माफियाओं के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की मांग की। साथ ही हर विद्युत उपकेंद्र पर 24 घंटे एक वरिष्ठ अधिकारी की क्रमवार उपस्थिति रखने की मांग भी रखी गई। शालिनी सिंह ने कहा, 'करोड़ों रुपये का राजस्व देने वाला नौएडा आज मूलभूत सुविधा बिजली के लिए संघर्ष कर रहा है। कुछ अधिकारियों की लापरवाही के कारण 'नो पावर कट ज़ोन' होने के बावजूद नौएडा के सैक्टर, सोसायटियां, औद्योगिक क्षेत्र और गांव सभी भारी बिजली संकट का सामना कर रहे हैं। जमीनी स्तर पर प्रभावी विद्युत मास्टर प्लान, बेहतर समन्वय और अधिकारियों की जवाबदेही सुनिश्चित करना इस समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।' उन्होंने कहा कि यदि समस्याओं का समयबद्ध समाधान नहीं हुआ तो नौएडा सिटीजन फोरम जनहित में आगे की रणनीति तय करेगा।

नवागत पुलिस अधीक्षक ने किया पदभार ग्रहण ,,

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) शहडोल। गुरूवार को शहडोल

जिले के नवागत पुलिस अधीक्षक श्री संजय कुमार अग्रवाल ने पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंचकर पदभार ग्रहण किया। श्री अग्रवाल मध्यप्रदेश पुलिस राज्य पुलिस सेवा के वर्ष 1997 बैच के अधिकारी हैं तथा वर्ष 2016 से भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं। इससे पूर्व वे डीसीपी इंटेलिजेंस भोपाल तदोपरांत मध्यप्रदेश पुलिस अकादमी में पदस्थ रहे हैं। अपने सेवाकाल में उन्होंने भिंड, नीमच, टीकमगढ़, छतरपुर, सागर, दतिया, शिवपुरी एवं जबलपुर, भोपाल सहित विभिन्न जिलों में कार्य किया है। इसके अतिरिक्त वे पुलिस अकादमी, सीआईडी, विशेष शाखा, विशेष सशस्त्र बल, आर्थिक अपराध प्रकोष्ठएसआईएसएफ सहित विभिन्न महत्वपूर्ण इकाइयों में भी सेवाएँ दी हैं। उत्कृष्ट सेवाओं के लिए श्री अग्रवाल को मध्यप्रदेश शासन द्वारा वर्ष 2017 एवं 2018 का के.एफ. रुस्तम पुरस्कार तथा वर्ष 2020 में भारत सरकार द्वारा सराहनीय सेवाओं के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक से सम्मानित किया जा चुका है।

अन्य पिछड़े वर्ग के बेरोजगार युवक/युवतियां निःशुल्क ओ-लेवल/सी0सी0सी0 कम्प्यूटर प्रशिक्षण के लिए करें आवेदन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। वित्तीय वर्ष 2026-27 में अन्य पिछड़े वर्ग के बेरोजगार युवक/युवतियों को निःशुल्क ओ-लेवल/सी0सी0सी0 कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु ऑन-लाइन आवेदन शर्तों/प्रतिबन्धों के अनुसार आमंत्रित किया गया है, जिसके अंतर्गत इस योजना के अन्तर्गत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले आवेदक की आय सीमा रू0 1,00,000/- (धनराशि रू0 एक लाख) से अधिक नहीं होनी चाहिए।आय एवं जाति प्रमाण पत्र तहसील स्तर से निर्गत होना चाहिए। कम्प्यूटर प्रशिक्षण के लिए (10 प्लस 2) इण्टरमीडिएट न्यूनतम शैक्षिक अर्हता आवश्यक है। प्रशिक्षणार्थी/आवेदक की उम्र 35 वर्ष से अधिक न हों। जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी कोमिल द्विवेदी ने प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से बताया है कि इच्छुक अभ्यर्थियों द्वारा पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग उ0प्र0 की वेबसाइट backwardwelfareup.gov.in या obccomputertraining.upsdc.gov.in पर ऑन-लाइन आवेदन दिनांक 20 जुलाई, 2026 तक किया जा सकता है। अन्य किसी माध्यम से प्राप्त आवेदन स्वीकार नहीं किये जायेंगे। ऑनलाइन आवेदन के उपरान्त आवेदन की प्रति की प्रिण्ट आउट प्राप्त कर समस्त अभिलखों/विवरणों (आय/जाति/आधार कार्ड व अन्य शैक्षिक अभिलेख) को संलग्न करते हुये उसकी हार्ड कॉपी कार्यालय, जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी, कक्ष सं0 65 विकास भवन, प्रयागराज में दिनांक 20 जुलाई, 2026 की सायं 05:00 बजे तक जमा किया जायेगा। अधिक जानकारी के लिए कार्यालय जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी, प्रयागराज में सम्पर्क करें।

मण्डलीय पेंशन अदालत का आयोजन अगस्त माह के प्रथम सप्ताह में

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। सेवानिवृत्त राज्य कर्मचारियों तथा अधिकारियों

को सेवानैवृत्तिक लाभों की स्वीकृति/भुगतान के प्रकरणों में यदि कोई शिकायत हो, तो वे अपनी शिकायत निर्धारित वाद पत्र पर तीन प्रतियों में 25 जुलाई तक किसी भी कार्य दिवस में जमा कर सकते हैं।सेवानिवृत्त राज्य कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति पर अनुमन्य लाभों के लम्बित मामलों को शीघ्र निस्तारित कराने के लिये मण्डलायुक्त की अध्यक्षता में मण्डल स्तर पर पेंशन अदालत गठित है। वित्तीय वर्ष 2026-27 की प्रथम मण्डलीय पेंशन अदालत माह अगस्त, 2026 के प्रथम सप्ताह में आयोजित की जानी है। आस्था तिवारी-अपर निदेशक संयोजक, पेंशन अदालत ने बताया कि सेवानिवृत्त राज्य कर्मचारियों तथा अधिकारियों को सेवानैवृत्तिक लाभों की स्वीकृति/भुगतान के प्रकरणों में यदि कोई शिकायत हो, तो वे अपनी शिकायत निर्धारित वाद पत्र पर तीन प्रतियों में अपर निदेशक, कोषागार एवं पेंशन, प्रयागराज मण्डल, नवीन कोषागार भवन, कचेहरी रोड, प्रयागराज के कार्यालय में दिनांक 25.07.2026 तक किसी भी कार्य दिवस में जमा कर सकते हैं।वाद पत्र का प्रारूप अपर निदेशक, कोषागार एवं पेंशन, प्रयागराज मण्डल, प्रयागराज के कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है।दिनांक 25.07.2026 के बाद प्राप्त होने वाले प्रार्थना पत्रों पर विचार नहीं किया जायेगा। निर्धारित प्रारूप पर प्राप्त प्रार्थना पत्रों में ही पेंशन अदालत में सुनवाई की जायेगी।

नोएडा में 'ठग गिरोह' की गुंडागर्दी, गुरुद्वारे के नाम पर चंदे के बहाने लूटपाट

विरोध करने पर व्यापारी नेता विकास जैन की गाड़ी पर हमला, चौकी में रिपोर्ट दर्ज

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। के व्यस्ततम इलाकों में

से एक, बोटैनिकल गार्डन के पास धार्मिक आस्था की आड़ में लोगों को ठगने और विरोध करने पर हिंसक हमला करने वाले एक शातिर गिरोह का सनसनीखेज मामला सामने आया है। यहाँ पाँच संदिग्ध युवकों का एक गिरोह सक्रिय है, जो राहगीरों को अपने जाल में फंसाकर अवैध वसूली और लूटपाट की वारदातों को अंजाम दे रहा है। धार्मिक पहनावे और भविष्य बताने की आड़ में ठगी का खेल-पीड़ितों से मिली जानकारी के अनुसार, इस गिरोह के सदस्य सरदार के पहनावे (सिक्ख भेषभूषा) में रहते हैं। ये लोग राहगीरों और वाहन चालकों को गुरुद्वारे के नाम पर रसीद कट्टा दिखाकर चंदा मांगते हैं। गाड़ी रुकने के बाद ये लोग भगवान की फोटो दिखाते हैं और अपनी किसी कथित विद्या या ज्योतिष का हवाला देकर लोगों का भविष्य बताने का ढोंग करते हैं। इसके बाद बातों ही बातों में लोगों को सम्मोहित या भयभीत कर अपने जाल में फंसाते हैं और उनसे मोटी रकम लूट लेते हैं। पैसे न देने पर गाड़ी पर हमला, बाल-बाल बचे विकास जैनः- इस गिरोह की गुंडागर्दी का शिकार खुद उत्तर प्रदेश युवा व्यापार मंडल के प्रदेश अध्यक्ष, प्रसिद्ध समाजसेवी और व्यापारी नेता विकास जैन हुए। व्यापारी नेता विकास जैन ने बताया कि जब वे बोटैनिकल गार्डन के पास से गुजर रहे थे, तभी इन पाँचों संदिग्धों ने उन्हें रोकने का प्रयास किया। जब इन्होंने उनके झांसे में आने और पैसे देने से इनकार किया, तो इन बदमाशों ने आपा खो दिया और उनकी गाड़ी पर हिंसक हमला कर दिया। बदमाशों ने गाड़ी का शीशा तोड़ने की पूरी कोशिश की, लेकिन उन्होंने सूझबूझ दिखाते हुए किसी तरह गाड़ी को वहाँ से सुरक्षित निकाला। बोटैनिकल गार्डन चौकी पर रिपोर्ट दर्ज, सख्त कार्रवाई की मांगः-घटना के तुरंत बाद व्यापारी नेता विकास जैन ने बोटैनिकल गार्डन पुलिस चौकी पहुंचकर इस पूरे मामले और गिरोह के तौर-तरीकों की लिखित रिपोर्ट दर्ज करा दी है। उन्होंने पुलिस प्रशासन से मांग की है कि आस्था के नाम पर ठगी और गुंडागर्दी करने वाले इस बहरूपिया गिरोह को तुरंत गिरफ्तार किया जाए। यह गिरोह पूरे क्षेत्र के यात्रियों और व्यापारियों के लिए बड़ा खतरा बन चुका है। व्यापारी नेता विकास जैन ने आम जनता से भी अपील की है कि बोटैनिकल गार्डन या आसपास के क्षेत्रों में इस तरह के संदिग्धों के झांसे में न आएं, गाड़ियां न रोकें और तुरंत पुलिस को सूचित करें।

सेक्टर-73 में 18 जुलाई को गूंजेगी दिव्यांग बच्चों की प्रतिभा, शाम को कवि बांधेंगे समां

फस्टवन रिहैब फाउंडेशन मनाएगा फाउंडेशन डे, केंद्रीय राज्यमंत्री बीएल वर्मा,वरिष्ट बीजेपी नेता मुरली मनोहर होंगे मुख्य अतिथि

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। सपनों को पंख और हुनर

को पहचान दिलाने के उद्देश्य से फस्टवन रिहैब फाउंडेशन सेक्टर-73 सामुदायिक केंद्र में 18 जुलाई को फाउंडेशन डे पर भव्य आयोजन करेगा। कार्यक्रम दो सत्रों में होगा – सुबह दिव्यांग बच्चों की प्रस्तुति और शाम को कवि सम्मेलन। आयोजन को लेकर आसपास की सोसाइटियों में चर्चा तेज है। सुबह 10 बजे से पहला सत्रः बच्चों को मिलेगा मंचः-संस्था के संस्थापक एवं निदेशक डॉ. महिपाल सिंह ने बताया कि प्रथम सत्र शनिवार 18 जुलाई को सुबह 10 बजे से शुरू होगा। इसमें जरूरतमंद दिव्यांग बच्चे सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देंगे। 'एक सम्मान मां के नाम' कार्यक्रम के साथ संस्था की पुस्तक व वार्षिक पत्रिका का विमोचन होगा। बच्चों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण सत्र भी रखा गया है, जिससे उन्हें आत्मनिर्भर बनने में मदद मिलेगी। इस मंच से विशेष बच्चों को अपनी प्रतिभा दिखाने और समाज की मुख्यधारा से जुड़ने का अवसर मिलेगा। शाम 6 बजे से दूसरा सत्रः सजेगा कवियों का मंचः-दूसरे सत्र में शाम 6 बजे से कवि सम्मेलन होगा। इसमें विष्णु सक्सेना, शंभू शिखर, विनोद पांडे, सरिता सिंह व शशि पांडेय जैसे मशहूर कवि अपनी रचनाओं से श्रोताओं का मनोरंजन करेंगे। अतिथियों का स्वागत व सम्मान भी किया जाएगा। ये रहेंगे मुख्य व विशिष्ट अतिथिः-कार्यक्रम में मुख्य अतिथि केंद्रीय राज्य मंत्री बीएल वर्मा व भाजपा के वरिष्ठ नेता मुरली मनोहर जोशी होंगे। विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. पीयूष द्विवेदी, कुश्ती संघ गौतमबुद्ध नगर के अध्यक्ष सतपाल यादव, सागर सिन्हा, सत्यम पांडे एवं महर्षि यूनिवर्सिटी के जनसंपर्क अधिकारी शिवम् यादव मौजूद रहेंगे। शहर के गणमान्य भी होंगे शामिलः-आयोजन में यू फ्लैक्स के दिनेश जैन, लोकमंच के महासचिव महेश सक्सेना, फेलिक्स अस्पताल के चेयरमैन डीके गुप्ता, किसान नेता सुखवीर खलीफा, रामा बैंक्विट के अमरजीत सिंह, फोनरवा कोषाध्यक्ष पवन यादव, सेक्टर-122 आरडब्ल्यूए अध्यक्ष शिवकुमार तिवारी, सेक्टर-70 से अमित चौहान, सुखदेव शर्मा, मनोज चौधरी समेत शहर के कई सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि शामिल होंगे। डॉ. महिपाल सिंह ने बताया कि फाउंडेशन लगातार जरूरतमंद दिव्यांग बच्चों के पुनर्वास व प्रशिक्षण पर काम कर रहा है। यह कार्यक्रम बच्चों को मंच देने के साथ व्यावसायिक प्रशिक्षण से जोड़कर उन्हें रोजगार के अवसरों के लिए तैयार करेगा। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ेगा और समाज में सकारात्मक संदेश जाएगा। पुस्तक विमोचन व सम्मान समारोह से बच्चों व उनके परिवारों को प्रोत्साहन मिलेगा।

हर वर्ष जलभराव आखिर किसकी विफलता? सामाजिक संस्था एन.सी.एफ. ने अधिकारियों की जवाबदेही तय करने की उठाई मांग

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। लगातार हो रही बारिश

ने एक बार फिर नोएडा प्राधिकरण की मानसून पूर्व तैयारियों की हकीकत उजागर कर दी है। शहर की मुख्य सड़कें, सर्विस रोड, चौराहे, आवासीय एवं औद्योगिक क्षेत्र जलमग्न हो गए। घंटों तक लगे जाम, पानी में बंद पड़े वाहन, धक्का लगाते ई-रिक्शा और बाइक सवार, काम पर जाने के लिए कमर तक पानी में उतरने को मजबूर महिलाएं और बच्चे-इन दृश्यों ने स्मार्ट सिटी नोएडा की तस्वीर पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। इन्हीं हालात का जायजा लेने के लिए आज नोएडा सिटीजन फोरम की कार्यकारी अध्यक्षा शालिनी सिंह स्वयं शहर की सड़कों पर उतरीं। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों का निरीक्षण किया, जहां कई स्थानों पर नालियां ओवरफ्लो होती मिलीं, बिना ढके नालों में बिजली के तार पड़े दिखाई दिए, जिससे कभी भी बड़ा हादसा हो सकता है। कई औद्योगिक इकाइयों में बारिश का पानी घुसने से लाखों रुपये के नुकसान की जानकारी भी सामने आई। निरीक्षण के दौरान यह भी देखने को मिला कि जिन नालों की सफाई मानसून शुरू होने से पहले पूरी हो जानी चाहिए थी, उनकी सफाई आज बारिश के बीच भारी मशीनों से कराई जा रही थी। शालिनी सिंह ने इसे प्रशासनिक विफलता बताते हुए कहा कि यदि समय रहते कार्य पूरे कर लिए जाते तो आज नोएडावासियों को इस दुर्दशा का सामना नहीं करना पड़ता। शालिनी सिंह ने कहा कि हर वर्ष करोड़ों रुपये नालों की सफाई, सीवेज व्यवस्था और जल निकासी पर खर्च किए जाते हैं, लेकिन पहली ही बारिश में पूरा शहर जलमग्न हो जाता है। इससे साफ है कि कहीं न कहीं गंभीर लापरवाही, भ्रष्ट कार्यप्रणाली और निगरानी की विफलता है। केवल ठेकेदारों पर जुर्माना लगाकर या औपचारिक कार्रवाई कर मामले को दबा देना समाधान नहीं है। जिन अधिकारियों को इन कार्यों की निगरानी और गुणवत्ता सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी दी गई थी, उनकी जवाबदेही भी तय होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि नोएडा देश और प्रदेश की 'शो विंडो' माना जाता है, लेकिन हर मानसून में जलभराव की तस्वीरें पूरे प्रदेश की छवि को धूमिल करती हैं। नोएडावासियों की उम्मीदें भी हर वर्ष इस जलभराव में डूबती नजर आती हैं। यदि यही स्थिति रही तो नागरिकों का प्रशासन पर विश्वास पूरी तरह समाप्त हो जाएगा। नोएडा सिटीजन फोरम ने नोएडा के विधायक से तत्काल हस्तक्षेप करते हुए निम्न मांगें रखीं-1. नोएडा प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) से मानसून पूर्व तैयारियों एवं जलभराव के कारणों पर विस्तृत रिपोर्ट लेकर उसे सार्वजनिक किया जाए। 2. जल निकासी एवं नालों की सफाई के लिए जिन कंपनियों को ठेके दिए गए हैं, उनके नाम, कार्यों का विवरण, भुगतान और संबंधित जिम्मेदार अधिकारियों की जानकारी सार्वजनिक की जाए। 3. जलभराव रोकने में विफल कंपनियों को तत्काल ब्लैकलिस्ट किया जाए। 4. संबंधित कार्यों की निगरानी में लापरवाही बरतने वाले नोएडा प्राधिकरण के अधिकारियों की जिम्मेदारी तय कर उनके विरुद्ध कठोर प्रशासनिक एवं विभागीय कार्रवाई की जाए। 5. भविष्य में ऐसी स्थिति दोबारा उत्पन्न न हो, इसके लिए समयबद्ध, पारदर्शी एवं जवाबदेह कार्ययोजना बनाकर जनता के सामने प्रस्तुत की जाए। अंत में शालिनी सिंह ने कहा, 'प्राधिकरण के अधिकारी एयर-कंडीशन दफ्तरों से निकलकर सड़कों पर उतरें और सीवेज के मास्टर प्लान की वास्तविक स्थिति देखें। जब थोड़ी सी बारिश में पूरा शहर ठहर जाता है, उद्योगों को नुकसान होता है और आम नागरिक पानी में जान जोखिम में डालकर निकलने को मजबूर होते हैं, तब यह केवल प्राकृतिक आपदा नहीं बल्कि प्रशासनिक विफलता है। अब समय आ गया है कि आश्वासन नहीं, जवाबदेही और ठोस कार्रवाई दिखाई दे।

एडीएम ने जिला विद्यालय परिवहन यान एवं सड़क सुरक्षा समिति की बैठक कर दिए आवश्यक निर्देश

विद्यालय संचालकों को चालक एवं परिचालक का सत्यापन कराने, विद्यालय वाहनों से संबंधित सभी प्रपत्रों की जांच करने तथा वाहन सुरक्षा मानकों को पूर्ण रूप से लागू करने के निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। गुरूवार को जिलाधिकारी चर्चित गौड़ के

निर्देश पर शुक्रवार को अपर जिलाधिकारी न्यायिक रमेश चंद्र की अध्यक्षता में आज कलक्ट्रेट सभागार में जिला विद्यालय परिवहन सड़क सुरक्षा समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक का उद्देश्य स्कूली बच्चों की सुरक्षित एवं सुगम यात्रा सुनिश्चित करना तथा विद्यालय वाहनों में निर्धारित सुरक्षा मानकों के अनुपालन की समीक्षा करना था। बैठक में सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी कौशल कुमार सिंह ने अवगत कराया कि जिला विद्यालय परिवहन सड़क सुरक्षा समिति की बैठक वर्ष में दो बार आयोजित की जाती है। उन्होंने बताया कि इन बैठकों का मुख्य उद्देश्य स्कूली बच्चों के आवागमन को सुरक्षित बनाना है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री द्वारा भी सड़क सुरक्षा समिति को सक्रिय रखते हुए यातायात नियमों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं। एडीएम ने बैठक में उपस्थित अधिकारियों को निर्देशित किया कि थाना स्तर पर विशेष टीमें गठित कराकर स्कूल वाहनों एवं उन अन्य वाहनों की नियमित जांच की जाए। जिनके माध्यम से बच्चे विद्यालय आते-जाते हैं। उन्होंने कहा कि वाहनों की फिटनेस, चालक की पात्रता, सुरक्षा उपकरणों की उपलब्धता तथा अन्य आवश्यक मानकों की गहन जांच सुनिश्चित की जाए। आईओएस जय राम सिंह ने सभी विद्यालय प्रबंधकों एवं संचालकों को निर्देश दिए कि वे अपने विद्यालयों में केवल मानक अनुरूप एवं सुरक्षित वाहन ही संचालित करें।उन्होंने कहा कि प्रत्येक वाहन पर स्पष्ट रूप से विद्यालय वाहन का चिह्न अंकित होना चाहिए, ताकि उसकी पहचान में कोई संशय न रहे। साथ ही उन्होंने सभी स्कूल संचालकों को वाहन परमिट बनवाने, वाहनों में जीपीएस, सीसीटीवी कैमरा, फायर सेफ्टी उपकरण, आपातकालीन द्वार एवं अन्य निर्धारित सुरक्षा व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। बैठक में उपस्थित विभिन्न विद्यालयों के प्रबंधकों ने अपनी समस्याओं से भी अधिकारियों को अवगत कराया। एआरटीओ ने यह भी निर्देश दिए कि वाहन बेचते समय वाहन का पंजीकरण निरस्त कराते हुए संबंधित एनओसी दर्ज कराई जाए, जिससे विभाग को वाहन संबंधी सही जानकारी प्राप्त हो सके। उन्होंने सभी विद्यालय संचालकों को चालक एवं परिचालक का सत्यापन कराने, विद्यालय वाहनों से संबंधित सभी प्रपत्रों की जांच करने तथा वाहन सुरक्षा मानकों को पूर्ण रूप से लागू करने के निर्देश दिए।

इस अवसर पर बीएसए मुकुल आनंद पाण्डेय, पीटीओ मनोज कुमार गुप्ता, यातायात प्रभारी नरेंद्र कुमार सिंह आदि रहे।

हर हाथ में हुनर, हर परिसर में हरियाली, 12 जुलाई को 2.53 लाख पौधे लगाएगा व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास विभाग

सरकारी-प्राइवेट आईटीआई और कौशल केंद्रों में चलेगा वृक्षारोपण महायज्ञ, योगी सरकार के हरित संकल्प को देगा गति - कपिल देव अग्रवाल, 'हर छात्र लगाएगा एक पेड़, बनेगा हरित योद्धा', सभी संस्थानों में होगा पौधरोपण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर 12 जुलाई को आयोजित होने वाले 'वृक्षारोपण महायज्ञ-2026' में व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास विभाग 2.53 लाख पौधरोपण कर हरित उत्तर प्रदेश की नींव को और मजबूत करेगा। प्रदेश के व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमशीलता राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कपिल देव अग्रवाल ने बताया कि योगी सरकार ने वृक्षारोपण को केवल सरकारी औपचारिकता नहीं, बल्कि युवा शक्ति को पर्यावरण से जोड़ने का जन-आंदोलन बनाया है। योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में 'एक पेड़ माँ के नाम' का मंत्र लेकर प्रदेश का हर युवा अब हरित योद्धा बन रहा है। मंत्री कपिल देव अग्रवाल ने कहा कि विभाग के अधीन प्रदेश भर के सभी राजकीय आईटीआई, निजी आईटीआई और कौशल विकास केंद्रों को वृक्षारोपण महायज्ञ में सक्रिय भागीदारी के निर्देश दिए

गए हैं। प्रदेश की सभी सरकारी-निजी आईटीआई और कौशल विकास केंद्रों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे लाखों युवा इस अभियान से जुड़ेंगे। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य है कि हर प्रशिक्षु एक पेड़ अवश्य लगाए और उसकी सुरक्षा का संकल्प भी ले। आईटीआई और कौशल केंद्रों की खाली भूमि, बाउंड्री और परिसरों में फलदार, छायादार और औषधीय पौधे लगाए जाएंगे। जहाँ बाउंड्री नहीं है, वहाँ पेड़ लगाकर हरित बाउंड्री बनाई जाएगी। मंत्री कपिल देव अग्रवाल ने कहा कि योगी सरकार का मॉडल है - 'हुनर के साथ संस्कार और रोजगार के साथ पर्यावरण'। उन्होंने कहा कि अभियान की सफलता केवल पौधे लगाने से नहीं, बल्कि उनके संरक्षण से तय होगी। उन्होंने कहा कि व्यावसायिक शिक्षा विभाग में पढ़ने वाला युवा जब अपने हाथों से हुनर सीखने के साथ-साथ पर्यावरण को संवारने का काम करेगा, तो यह 'विकसित उत्तर प्रदेश - हरित उत्तर प्रदेश' के संकल्प को मजबूती देगा। सभी जिला समन्वयक, प्रधानाचार्य और प्राइवेट आईटीआई संचालकों को निर्देश दिए गए हैं कि वे दो दिन पूर्व ही वन विभाग से पौधे प्राप्त कर लें और 12 जुलाई को जनप्रतिनिधियों, प्रशिक्षुओं और स्थानीय नागरिकों के साथ वृक्षारोपण महायज्ञ को उत्सव के रूप में मनाएं।

अभाविप के स्थापना दिवस सप्ताह के अंतर्गत स्वास्थ्य शिविर का आयोजन, सैकड़ों ग्रामीणों ने लिया स्वास्थ्य लाभ

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, सोनभद्र द्वारा अभाविप के 78वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में चल रहे स्थापना दिवस सप्ताह के अंतर्गत आज राबर्ट्सगंज तहसील के बहुआर ग्राम सभा में एक दिवसीय निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का सफल आयोजन किया गया। इस शिविर में क्षेत्र के सैकड़ों ग्रामीणों ने स्वास्थ्य परीक्षण एवं चिकित्सकीय परामर्श प्राप्त कर स्वास्थ्य लाभ लिया। शिविर में उपस्थित चिकित्सकों द्वारा विभिन्न रोगों की जांच कर आवश्यक परामर्श प्रदान किया गया तथा जरूरतमंद लोगों को आवश्यक दवाइयाँ भी उपलब्ध कराई गईं। बड़ी संख्या में महिलाओं, बुजुर्गों, युवाओं एवं बच्चों ने शिविर का लाभ उठाया। इस अवसर पर अभाविप कार्यकर्ताओं ने कहा कि विद्यार्थी परिषद केवल छात्रहित के लिए कार्य करने वाला संगठन ही नहीं, बल्कि समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी रचनात्मक भूमिका का निर्वहन करता है। स्थापना दिवस सप्ताह के अंतर्गत आयोजित सेवा गतिविधियाँ समाज के प्रति परिषद की संवेदनशीलता एवं उत्तरदायित्व का परिचायक हैं। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं व्यक्तित्व विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि सेवा, संस्कार एवं राष्ट्र निर्माण के माध्यम से समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचकर सकारात्मक परिवर्तन लाना भी है। इसी भावना के साथ स्थापना दिवस सप्ताह के दौरान विभिन्न सामाजिक एवं सेवा संबंधी कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इस दौरान जिला संयोजक राहुल जालान, नगर मंत्री धर्मेश पाण्डेय, सत्यम शुक्ला, हर्ष, सक्षम आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम के सफल आयोजन में अभाविप के कार्यकर्ताओं का विशेष योगदान रहा। स्थानीय नागरिकों एवं ग्रामीणों ने इस पहल की सराहना करते हुए परिषद के प्रति आभार व्यक्त किया तथा भविष्य में भी ऐसे जनसेवा के कार्यक्रम आयोजित किए जाने की अपेक्षा व्यक्त की।

सोन महोत्सव की तर्ज पर सोनभद्र में मेगा पर्यटन एवं उद्योग महोत्सव आयोजित करने का प्रस्ताव प्रेषित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार संगठन, के जिला अध्यक्ष कौशल शर्मा जिलाधिकारी महोदय से मिलकर सोन महोत्सव की तर्ज पर सोनभद्र में मेगा पर्यटन एवं उद्योग महोत्सव आयोजित करने का प्रस्ताव प्रेषित किया। संगठन के जिलाध्यक्ष कौशल शर्मा ने कहा कि सोनभद्र में सोन महोत्सव 2009-10 में जिला प्रशासन द्वारा शुरू की गई था। इसका मुख्य उद्देश्य सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देना जिले की समृद्ध लोक संस्कृति, पारंपरिक संगीत, और कला को सुरक्षित एवं प्रोत्साहित करना।स्थानीय और जनजातीय कलाकारों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने और बाहरी कलाकारों से सीखने के लिए उत्तम मंच प्रदान करना। दूसरा उद्देश्य था पर्यटन को बढ़ावा देना सोनभद्र की प्राकृतिक सुंदरता और ऐतिहासिक धरोहरों को राज्य स्तर पर पहचान दिलाना और पर्यटन को आकर्षित करना। तीसरा उद्देश्य था जनजाति संस्कृति का संरक्षण करना जिले में निवास करने वाली विभिन्न जातियों की अनूठी कला और परंपराओं को सहेजना और लोगों को मुख्य धारा से जोड़ना। परंतु पिछले दो दशक से सोनभद्र की पहचान विकसित करने वाला यह महोत्सव बंद पड़ा है। श्री शर्मा ने मुख्यमंत्री महोदय के नाम से संबोधित पत्र जिलाधिकारी महोदय को देते हुए कहा कि पूर्व में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला सोन महोत्सव जनपद की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक था ।यदि उपरोक्त कार्यक्रम को राज्य सरकार द्वारा मेगा पर्यटन एवं उद्योग महोत्सव के रूप में विकसित किया जाए तो यह केवल सांस्कृतिक आयोजन न रहकर पर्यटन उद्योग, निवेश व्यापार, एमएसएमई, ओडीओपी, हस्तशिल्प, जनजातीय कला तथा स्थानीय उद्यमिता का एक राष्ट्रीय मंच बन सकता है। उन्होंने अपने मांग पत्र में कहा कि पर्यटन, औद्योगिक विकास, संस्कृत, वन विभाग, एवं जिला प्रशासन के संयुक्त तत्वाधान में प्रतिवर्ष इसका भव्य आयोजन सुनिश्चित किया जाए एवं देश के बड़े निवेशकों उद्योगपतियों पर्यटन विशेषज्ञों एवं ट्रेवल एजेंसी को आमंत्रित कर सोनभद्र की औद्योगिक एवं पर्यटन का व्यापक प्रचार प्रसार किया जाए। श्री शर्मा अपने पत्र के माध्यम से इस महोत्सव के लिए पृथक बजट एवं उच्च स्तरीय आयोजन समिति का गठन करने का भी मांग किया है। इस आयोजन को उत्तर प्रदेश के प्रमुख आयोजनों की श्रेणी में स्थान प्रदान किया जाए। उन्होंने आगे कहा कि यह आयोजन जनपद सोनभद्र को पर्यटन उद्योग, निवेश तथा रोजगार के क्षेत्र में नई पहचान प्रदान करेगी तथा स्थानीय व्यापार, हस्तशिल्प, होटल, परिवहन एवं सेवा क्षेत्र के विकास को अभूतपूर्व गति मिलेगी इससे विकसित उत्तर प्रदेश, विकसित भारत के संकल्प को भी सशक्त आधार प्राप्त होगा।

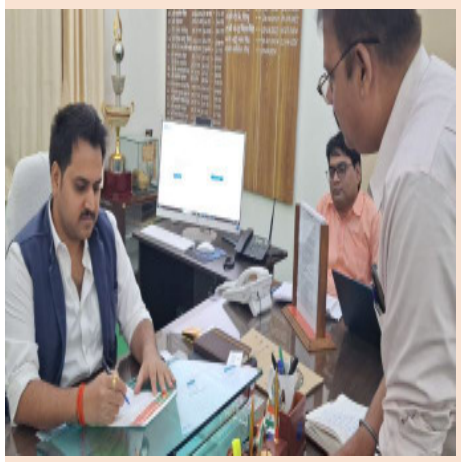

सोनभद्रः 'पेड़ है तो प्राण है' बना जनआंदोलन, सैकड़ों फलदार पौधे वितरित,कंपनी के विरोध में आंदोलन की चेतावनी - संदीप मिश्रा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र/नगवां। ब्लॉक के सोमा ग्राम पंचायत में किसान नौजवान संघर्ष मोर्चा के संयोजक संदीप मिश्रा के नेतृत्व में 'पेड़ है तो प्राण है' अभियान के तहत सैकड़ों फलदार पौधों का वितरण किया गया। इस दौरान ग्रामीणों ने पौधों की सुरक्षा और देखभाल अपने परिवार के सदस्य की तरह करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संदीप मिश्रा ने कहा कि यह अभियान अब जनआंदोलन का रूप ले चुका है। उन्होंने आरोप लगाया कि विकास के नाम पर क्षेत्र के जल, जंगल, जमीन, पेड़, पानी और पहाड़ों को नुकसान पहुंचाने की कोशिश की जा रही है। उन्होंने मुख्यमंत्री से मांग की कि 24 दिसंबर 2024 के शासनादेश की भावना के अनुरूप बड़े पैमाने पर पेड़ों की कटाई पर तत्काल रोक लगाई जाए। उनका आरोप है कि कुछ वन विभाग के अधिकारियों की मिलीभगत से एक कंपनी को लगभग 6,000 पेड़ काटने की अनुमति दी गई है, जिसकी निष्पक्ष जांच कर कार्रवाई की जानी चाहिए। संदीप मिश्रा ने चेतावनी दी कि यदि पेड़ों की कटाई नहीं रोकी गई तो किसान नौजवान संघर्ष मोर्चा पूरे जनपद में बड़ा जनआंदोलन करेगा। ग्रामीण मुखलाल चेरो ने कहा कि यदि क्षेत्र में कंपनी स्थापित हुई तो प्रदूषण बढ़ेगा और स्थानीय लोगों का जीवन प्रभावित होगा। उन्होंने कहा कि ग्रामीण अपने जंगल और जमीन की रक्षा के लिए हर संभव संघर्ष करेंगे। बिंदु खरवार ने कहा कि आदिवासी समाज का जीवन जंगल और प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित है। उन्होंने कहा कि यदि कंपनी लगाने का प्रयास किया गया तो ग्रामीण सोनभद्र से लेकर लखनऊ और दिल्ली तक आंदोलन करने के लिए मजबूर होंगे।कार्यक्रम में प्रमुख रूप से राकेश यादव, मुखलाल चेरो, बिंदु खरवार, बासमती खरवार, हीरावती चेरो, आकाश चौहान, शत्रुघ्न, बीना, दिनेश चेरो, विजय चौहान सहित सैकड़ों ग्रामीण उपस्थित रहे।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है
श्री महन्तू
अग्निशमन सुरक्षा अधिकारी नैनी, प्रयागराज
नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480
Enjoy Publicity

ऑस्ट्रेलियाई टी-20 लीग का ओपनिंग मैच भारत में होगा-मोदी बोले, चेन्नई में खेला जाएगा, भारत में पहली बार विदेशी क्रिकेट लीग का मुकाबला

ऑकलैंड। ऑस्ट्रेलिया की टी-20 लीग बिग बैश लीग (बीबीएल) का ओपनिंग मैच भारत में खेला जाएगा। मुकाबला चैन्नई के चेपॉक स्टेडियम में 12 दिसंबर को होगा। यह पहली बार होगा, जब किसी विदेशी क्रिकेट लीग का मैच भारत में होगा। पीएम मोदी ने शुक्रवार को इसकी घोषणा की। मोदी अपने ऑस्ट्रेलिया दौरे के तीसरे और आखिरी दिन मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड (एमसीजी) पहुंचे थे। इस दौरान उनके साथ ऑस्ट्रेलियाई पीएम एंथनी अल्बनीज और ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान स्टीव वॉ भी मौजूद रहे। पीएम इंडोनेशिया और आस्ट्रेलिया दौरे के बाद न्यूजीलैंड के लिए रवाना हो गए हैं। वे न्यूजीलैंड सरकार के साथ द्विपक्षीय बैठक करेंगे। इसके बाद 40 हजार भारतीयों को संबोधित करेंगे। बीबीएल पहली बार ऑस्ट्रेलिया से बाहर होगाः- बीबीएल के 15 साल के इतिहास में यह पहली बार होगा, जब लीग का कोई मैच ऑस्ट्रेलिया के बाहर आयोजित होगा। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया इसे दुनिया के सबसे बड़े क्रिकेट बाजार भारत में अपनी पहुंच बढ़ाने और लीग को वैश्विक पहचान देने की दिशा में बड़ा कदम मान रही है। पीएम मोदी अपने छह दिवसीय विदेश दौरे के आखिरी फेज में आज ऑस्ट्रेलिया से न्यूजीलैंड के लिए रवाना हुए। पीएम के दौरे की शुरुआत न्यूजीलैंड सरकार के साथ द्विपक्षीय बातचीत से शुरू होगी। इस दौरान दोनों देश फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (एफटीए) समझौते पर आगे की बातचीत करेंगे। इसके बाद पीएम एक बिजनेस इवेंट और स्पोर्टिंग इवेंट में शामिल होंगे। इसके बाद ऑकलैंड में 40 हजार भारतीयों को भी संबोधित करेंगे। पीएम के स्वागत के लिए भारतीय समुदाय ने 'किया ओरा मोदी' कार्यक्रम का आयोजन किया है। न्यूजीलैंड में 40 सालों बाद किसी भारतीय पीएम की यह यात्रा हो रही है। इससे पहले 1986 में तत्कालीन पीएम राजीव गांधी न्यूजीलैंड गए थे। ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज ने कहा कि ऑस्ट्रेलिया पहली बार अपनी बिग बैश लीग (बीबीएल) भारत ला रहा है। इस साल 12 दिसंबर को चेन्नई में मेलबर्न रेनेगेड्स और पर्थ स्कॉर्चर्स के बीच सीजन का पहला मैच खेला जाएगा। यह मैच सप्ताहभर चलने वाले 'G'Day Namaste' फेस्टिवल की शुरुआत करेगा, जिसमें ऑस्ट्रेलिया के खेल, संस्कृति और कारोबार से जुड़े कई कार्यक्रम होंगे।

उन्होंने कहा कि दोनों देशों में खेल सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि एक बड़ा आर्थिक क्षेत्र भी है। इसी सोच के साथ उन्होंने और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत-ऑस्ट्रेलिया स्पोर्ट्स कोलैबोरेशन रोडमैप लॉन्च किया हैं। इसके तहत खेल विज्ञान, बड़े खेल आयोजनों की मेजबानी, व्यापार, पर्यटन और निवेश जैसे क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच सहयोग बढ़ाया जाएगा। मेजबानी करेगा और 2036 ओलिंपिक की मेजबानी के लिए भी प्रयास कर रहा है। वहीं, ऑस्ट्रेलिया 2032 में ब्रिस्बेन ओलिंपिक की मेजबानी करेगा। ऐसे में दोनों देश बड़े खेल आयोजनों के लिए खेल बुनियादी ढांचे (स्पोर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर) के विकास में सहयोग बढ़ाएंगे।पीएम मोदी ने कहा कि ऑस्ट्रेलिया की बिग बैश लीग (बीबीएल) का एक मैच भारत के चेन्नई में आयोजित होगा। उन्होंने कहा कि भारत में किसी भी स्पोर्ट्स लीग का आयोजन उसे करोड़ों दर्शकों तक पहुंच और बड़ी लोकप्रियता दिलाता है। पीएम बोले- क्रिकेट भारत और ऑस्ट्रेलिया में खेल नहीं, एक जुनून-एमसीजी हर भारतीय के लिए खासः पीएम मोदी ने कहा कि मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड (एमसीजी) आते ही हर भारतीय के मन में भारत-ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट मुकाबलों की यादें ताजा हो जाती हैं। क्रिकेट सिर्फ खेल नहीं, साझा जुनूनः उन्होंने कहा कि भारत और ऑस्ट्रेलिया में क्रिकेट सिर्फ एक खेल नहीं, बल्कि दोनों देशों का साझा जुनून है। बच्चों में दिखे भविष्य के चैंपियनः कबड्डी और ऑस्ट्रेलियन फुटबॉल से जुड़े बच्चों का उत्साह देखकर लगा कि ये सिर्फ प्रदर्शनी मैच नहीं, बल्कि भविष्य के चैंपियनों की शुरुआत है।

ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों की तारीफः पीएम ने कहा कि ऑस्ट्रेलिया के दिग्गज क्रिकेटर स्टीव वॉ और पूर्व महिला क्रिकेटर लिसा स्थालेकर जैसे खिलाड़ियों से बहुत कुछ सीखने को मिलता है। स्टीव वॉ की मानसिक मजबूती और लिसा स्थालेकर का हरफनमौला प्रदर्शन हमें सिखाता है कि चैंपियन बनने के लिए प्रतिभा, सही सोच और लगातार मेहनत तीनों जरूरी हैं। अल्बनीज से क्रिकेट ने जोड़ाः मोदी ने कहा कि जब भी उनकी और प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज की मुलाकात हुई, क्रिकेट हमेशा दोनों के बीच जुड़ाव का माध्यम बना। भारत-ऑस्ट्रेलिया स्पोर्ट्स रोडमैप लॉन्चः दोनों प्रधानमंत्रियों ने मिलकर इंडिया-ऑस्ट्रेलिया स्पोर्ट्स कोलैबोरेशन रोडमैप की शुरुआत की। क्रिकेट के साथ दूसरे खेलों में भी सहयोगः पीएम ने कहा कि इस रोडमैप के जरिए दोनों देश क्रिकेट के अलावा कई अन्य खेलों में भी सहयोग बढ़ाएंगे।पीएम मोदी ने ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड (एमसीजी) का दौरा किया। इस दौरान उनके साथ ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज और ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान स्टीव वॉ भी मौजूद रहे। तीनों ने स्टेडियम का निरीक्षण किया और क्रिकेट से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। एमसीजी दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित क्रिकेट मैदानों में से एक है और भारत-ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट रिश्तों का भी अहम केंद्र माना जाता है।

10 साल का बेटा पैसे की कीमत नहीं समझता,दोस्तों को देखकर महंगे कपड़े-खिलौने मांगता है, कैसे सही रास्ते पर लाये

मुंबई। सवाल- हमारा बेटा 10 साल का है और हम एक मिडिल क्लास फैमिली हैं। हम अपने बेटे की जरूरतें पूरी करने की हरसंभव कोशिश करते हैं। लेकिन जैसे-जैसे वो बड़ा हो रहा है, हर नई चीज को अपनी जरूरत समझने लगा है। कभी महंगे जूते, कभी नए खिलौने और कभी ब्रांडेड सामानों की डिमांड करता है। मना करो तो कहता है कि उसके दोस्तों के मम्मी-पापा तो सब दिलाते हैं। वो दूसरों से तुलना करने लगा है। उसे समझ नहीं कि पैसे मेहनत से कमाए जाते हैं। जीवन में हर इच्छा तुरंत पूरी नहीं होती। वो अभी छोटा है। उसकी उम्र के हिसाब से ये बात हम उसे कैसे सिखाएं-समझाएं? विषय को समझेंगे एक्सपर्टः रिद्धि दोषी पटेल, चाइल्ड एंड पेरेंटिंग साइकोलॉजिस्ट, मुंबई जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। जवाब- सवाल पूछने के लिए शुक्रिया। आपकी चिंता बिल्कुल वाजिब है। आपका बेटा अपने दोस्तों को देखकर नई-नई चीजें खरीदने की जिद कर रहा है। बहुत से माता-पिता इस स्थिति का सामना करते हैं। दरअसल 8-10 साल की उम्र में बच्चे पैसे की वैल्यू नहीं समझते। उन्हें सिर्फ इतना पता होता है कि जो चीज उन्हें पसंद है, वह उनके पास होनी चाहिए। उन्हें यह समझ नहीं होती कि पैसे कहां से आते हैं, कैसे कमाए जाते हैं या बजट कैसे बनाया जाता है। लेकिन अच्छी बात ये है कि यही वह समय है, जब बच्चे को पैसे की वैल्यू और सेविंग की आदत सिखाई जा सकती है। जब उसे अपनी जरूरतों और इच्छाओं में फर्क करना सिखाया जा सकता है। तो चलिए समझते हैं कि ये काम कैसे करें। बच्चे पैसों की वैल्यू क्यों नहीं समझते? बच्चे पैसे की वैल्यू इसलिए नहीं समझ पाते, क्योंकि उनकी दुनिया और हमारी दुनिया अलग होती है। उनकी सोच कुछ इस तरह काम करती है– 1. वे नहीं जानते, पैसा कहां से आता है- उन्हें सिर्फ इतना पता होता है कि पैसे से उनकी पसंद की चीजें खरीदी जा सकती हैं। वे अभी यह नहीं समझते कि हर रुपए के पीछे मेहनत, समय और जिम्मेदारी होती है। 2. पैसों की कमी का अनुभव नहीं- उनकी पढ़ाई, खाना, कपड़े, खिलौने और सारी जरूरतें माता-पिता पूरी कर देते हैं। इसलिए उन्हें यह एहसास नहीं हो पाता कि हर खर्च सोच-समझकर किया जाता है। 3. दूसरों को देखकर सीखना- दोस्तों के महंगे जूते, खिलौने, गैजेट्स या सोशल मीडिया पर दिखने वाली लाइफस्टाइल उन्हें आकर्षित करती है। ऐसे में वे भी उन चीजों को अपनी जरूरत समझने लगते हैं। 4. घर में पैसों के बारे में बात न होना- अगर बच्चे को कभी यह नहीं बताया जाता कि बजट कैसे बनता है, बचत क्यों जरूरी है और हर इच्छा तुरंत पूरी क्यों नहीं की जा सकती, तो वह पैसों की अहमियत सीख ही नहीं पाता। बच्चे पैसों की वैल्यू क्यों नहीं समझते? बच्चे पैसे नहीं कमाते। उन्हें नहीं पता, जॉब क्या होती है। जॉब में क्या करना पड़ता है। उनकी सब जरूरतें पूरी होती हैं। वे सोशल मीडिया से सीखते हैं। दूसरे बच्चों को कॉपी करते हैं। पेरेंट्स पैसे के बारे में बात नहीं करते। बचपन से पैसों का महत्व नहीं बताते। बच्चे में सेविंग की आदत नहीं डालते। नॉर्मल है दोस्तों से तुलना करना-बच्चे अपने आसपास के लोगों को देखकर सीखते हैं। अगर किसी दोस्त के पास नया वीडियो गेम, महंगा बैग या नई साइकिल है, तो बच्चे में उसकी चाह जगना स्वाभाविक है। लेकिन यहां माता-पिता की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। अगर पेरेंट्स हर तुलना का जवाब नई चीजें खरीदकर देते हैं तो बच्चा पैसे की वैल्यू नहीं समझ पाता। आप उसे प्यार से समझा सकती हैं- 'हर परिवार की जरूरतें और प्राथमिकताएं अलग होती हैं।' 'किसी के पास ज्यादा चीजें हों तो जरूरी नहीं कि वह ज्यादा खुश होगा।' 'हम जो खरीदते हैं, उसके बारे में सोच-समझकर फैसला करते हैं।' इससे धीरे-धीरे बच्चा समझने लगता है कि तुलना जीवन का सही पैमाना नहीं है। पैसे की वैल्यू की शुरुआत घर से- अक्सर पेरेंट्स बच्चों से पैसों के बारे में बात करने से बचते हैं। उन्हें लगता है कि बच्चा अभी छोटा है। लेकिन सच यह है कि पैसे के बारे में सीखने की सबसे सही उम्र यही है। बच्चे को यह समझाना जरूरी है कि पैसा पेड़ पर नहीं उगता, बल्कि मेहनत से कमाया जाता है। उदाहरण के लिए आप उससे कह सकती हैं- 'पापा-मम्मी रोज काम करते हैं, तभी घर की जरूरतें पूरी होती हैं।' 'हमें अपनी कमाई को सोच-समझकर खर्च करना पड़ता है।' ध्यान रखें कि बातचीत का उद्देश्य बच्चे को डराना नहीं, बल्कि उसे जिम्मेदारी समझाना होना चाहिए। जरूरत और इच्छा का फर्कः-बच्चे को जरूरत और इच्छा का फर्क समझाने के लिए एक आसान-सी एक्टिविटी करें। किसी दिन उसके साथ 10-15 मिनट बैठें और एक कागज पर दो कॉलम बनाएं– 'जरूरत' और 'इच्छा'। फिर उससे कहें कि रोजमर्रा की चीजों को इन दोनों कॉलम में बांटे। 1. पहले बच्चे से पूछें- किसी भी चीज का फैसला आप खुद न करें। उसे सोचने का मौका दें कि वह चीज किस कैटेगरी में आती है। 2. हर जवाब की वजह पूछें- अगर वह किसी महंगे जूते को 'जरूरत' कहता है, तो पूछें, 'क्या तुम्हारे पास पहनने के लिए जूते नहीं हैं, या तुम्हें सिर्फ नया डिजाइन पसंद है?' 3. जरूरत और इच्छा का फर्क- बच्चे को बताएं कि जरूरत वे चीजें हैं, जिनके बिना काम नहीं चल सकता। इच्छा वे चीजें हैं, जिनके बिना भी काम चल सकता है या जिन्हें बाद में भी खरीदा जा सकता है। 4. शॉपिंग एक्टिविटी- खरीदारी के समय भी यही तरीका अपनाएं। जब भी बच्चा कोई नई चीज मांगे, उससे पहले पूछें- 'यह जरूरत है या इच्छा?' इससे वह खुद धीरे-धीरे सोच-समझकर फैसला लेना सीखेगा।

भारत 12 साल बाद इंग्लैंड से टी-20 सीरीज हारा, कप्तान श्रेयस के 80 रन काम नहीं आए- 9 विकेट से चौथा मैच गंवाया

ब्रिस्टल। भारत 12 साल बाद इंग्लैंड के खिलाफ टी-20 सीरीज हार गया। ब्रिस्टल के काउंटी ग्राउंड में खेले गए चौथे टी-20 में इंग्लैंड ने 159 रन का टारगेट सिर्फ 13.5 ओवर में एक विकेट खोकर हासिल कर लिया। इसी के साथ पांच मैचों की सीरीज में इंग्लैंड ने 3-0 की अजेय बढ़त बना ली। इंग्लैंड ने भारत के खिलाफ पिछली टी-20 सीरीज 2014 में जीती थी। वहीं भारत ने 2018-19 के बाद पहली बार लगातार दूसरी टी-20 सीरीज गंवाई। इससे पहले टीम आयरलैंड के खिलाफ 2-0 से सीरीज हारकर आई थी। श्रेयस की फिफ्टी, सूर्यवंशी 15 रन बना सकेः-भारत ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी चुनी, लेकिन शुरुआत अच्छी नहीं रही। 48 रन तक तीन विकेट गिर गए। इसके बाद कप्तान श्रेयस अय्यर ने एक छोर संभालते हुए 49 गेंदों पर नाबाद 80 रन बनाए। उन्होंने अपनी पारी में 4 चौके और 5 छक्के लगाए, लेकिन दूसरे बल्लेबाज उनका साथ नहीं दे सके। भारत ने 20 ओवर में 7 विकेट पर 158 रन बनाए।

15 साल के वैभव सूर्यवंशी एक बार फिर बड़ी पारी खेलने में नाकाम रहे। वे 10 गेंदों पर 15 रन बनाकर जोफ्रा आर्चर की बॉल पर आउट हुए। तीन टी-20 इंटरनेशनल के बाद वैभव के बल्ले से अब तक सिर्फ 42 रन ही निकले हैं। उन्होंने पहले मैच में 14, दूसरे में 13 रन बनाए थे। शिवम दुबे ने 22, अभिषेक शर्मा ने 16, तिलक वर्मा ने 11, ईशान किशन ने 4, वॉशिंगटन सुंदर ने 5 और अक्षर पटेल ने 1 रन बनाया। इंग्लैंड की ओर से गेंदबाजी में जोफ्रा आर्चर और जोश टंग ने 2-2 विकेट लिए। विल जैक्स और आदिल रशीद को एक-एक विकेट मिला। ब्रुक-सॉल्ट ने 146 रन की साझेदारी कीः-159 रन का पीछा करने उतरी इंग्लैंड ने 13 रन पर पहला विकेट गंवा दिया। अर्शदीप सिंह ने जोस बटलर (8 रन) को आउट किया। इसके बाद कप्तान हैरी ब्रूक और फिल सॉल्ट ने भारतीय गेंदबाजों को कोई मौका नहीं दिया। दोनों ने दूसरे विकेट के लिए 68 गेंदों में नाबाद 146 रन की साझेदारी कर मैच एकतरफा बना दिया। ब्रूक ने सिर्फ 35 गेंदों पर नाबाद 79 रन बनाए। उन्होंने 8 चौके और 4 छक्के लगाए। ब्रूक ने 225.71 की स्ट्राइक रेट से बल्लेबाजी की। फिल सॉल्ट ने 42 गेंदों पर नाबाद 59 रन की पारी खेली। इसमें 9 चौके और 1 छक्का शामिल रहा। इंग्लैंड ने 37 गेंद रहते टारगेट हासिल कर लिया। पांचवां टी-20 11 जुलाई को साउथैम्पटन में शाम 7 बजे से खेला जाएगा। प्लेइंग-11ः-भारतः अभिषेक शर्मा, वैभव सूर्यवंशी, ईशान किशन (विकेटकीपर), श्रेयस अय्यर (कप्तान), तिलक वर्मा, शिवम दुबे, अक्षर पटेल, वॉशिंगटन सुंदर, प्रसिद्ध कृष्णा, अर्शदीप सिंह, प्रिंस यादव। इंग्लैंडः फिल सॉल्ट, जोस बटलर (विकेटकीपर), हैरी ब्रूक (कप्तान), जैकब बेथेल, टॉम बैंटन, सैम करन, विल जैक्स, रेहान अहमद, आदिल रशीद, जोफ्रा आर्चर, जोश टंग। इंग्लैंड ने ब्रिस्टल में खेले गए चौथे टी-20 में भारत को 9 विकेट से हराकर पांच मैचों की सीरीज में 3-0 की अजेय बढ़त बना ली। 159 रन का पीछा करते हुए इंग्लैंड ने सिर्फ 13.5 ओवर में एक विकेट खोकर मुकाबला जीत लिया। हैरी ब्रूक ने कप्तानी पारी खेलते हुए 35 गेंदों पर नाबाद 79 रन बनाए। उन्होंने 13वें ओवर में अर्शदीप सिंह पर शानदार छक्का लगाकर जीत लगभग तय कर दी। वहीं फिल सॉल्ट ने लगातार दूसरे मैच में अर्धशतक जमाते हुए नाबाद पारी खेली और विजयी रन भी बनाए। भारत की ओर से अर्शदीप सिंह ने जोस बटलर का एकमात्र विकेट लिया। इससे पहले भारतीय टीम 20 ओवर में 7 विकेट पर 158 रन ही बना सकी थी, जिसमें कप्तान श्रेयस अय्यर ने 49 गेंदों पर नाबाद 80 रन बनाए। लेकिन बाकी बल्लेबाज उनका साथ नहीं दे सके और इंग्लैंड ने एकतरफा अंदाज में मैच अपने नाम कर लिया।

कप्तान श्रेयस पहुंचे कोहली की बराबरी, इंग्लैंड ने पहली बार भारत से 2 प्लस मैचों की टी-20 सीरीज जीती, वैभव फिर फ्लॉप रहे

ब्रिस्टल। इंग्लैंड ने चौथे टी-20 में भारत को 9 विकेट से हराकर 5 मैचों की सीरीज में 3-0 की बढ़त बना ली। इसके साथ ही इंग्लैंड ने पहली बार भारत को दो या उससे ज्यादा मैचों की टी-20 सीरीज में हराया। 2018 के बाद यह पहली बार है, जब भारत इंग्लैंड के खिलाफ किसी भी फॉर्मेट में सीरीज हारा है। ब्रिस्टल में कप्तान श्रेयस अय्यर ने लगातार छठा टॉस जीतकर विराट कोहली की बराबरी की, लेकिन उनकी नाबाद 80 रन की पारी भी टीम को हार से नहीं बचा सकी। वहीं 15 साल के वैभव सूर्यवंशी लगातार तीसरे मैच में फ्लॉप रहे और सिर्फ 15 रन बनाकर आउट हुए। इंडिया बनाम इंग्लैंड मैच के टॉप रिकॉर्ड्स-मोमेंट्सः- 1. 12 साल बाद इंग्लैंड ने भारत को हराया-2014 के बाद पहली बार इंग्लैंड ने भारत को टी-20 सीरीज में हरा दिया। दोनों टीमों के बीच अब तक 10 सीरीज खेली गई हैं। इनमें भारत ने 5 और इंग्लैंड ने 4 जीती है। एक सीरीज ड्रॉ रही थी। 2. श्रेयस ने लगातार छठा टॉस जीताः- श्रेयस ने टी-20 में टॉस जीतने के मामले में विराट कोहली की बराबरी कर ली। उन्होंने लगातार छठवीं बार टॉस जीता। भारत के लिए लगातार सबसे ज्यादा टॉस जीतने का रिकॉर्ड महेंद्र सिंह धोनी के नाम है। उन्होंने 2010 से 2012 के बीच 7 टॉस जीते थे। श्रेयस ने कप्तानी डेब्यू के बाद लगातार सबसे ज्यादा टॉस जीतने का वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है। उन्होंने बतौर कप्तान अपने सभी 6 मैचों में टॉस जीते। 3. भारतीय इलेवन में 8 लेफ्ट हैंड बैटर खेलेः-भारत ने 8 लेफ्टी बैटर को प्लेइंग-11 में खिलाया। टी-20 में तीसरी बार भारत 8 बाएं हाथ के बल्लेबाजों से खेला। इससे पहले एशियन गेम्स 2023 में भारत सेमीफाइनल और फाइनल में इसी कॉम्बिनेशन के साथ उतरा था। 4. श्रेयस ने राशिद के खिलाफ 44 रन बनाएः-श्रेयस ने आदिल राशिद के खिलाफ 16 गेंदों में 44 रन बनाए है। वे टी-20 में किसी एक गेंदबाज के खिलाफ सबसे ज्यादा रन बनाने वाले तीसरे भारतीय बन गए हैं। इस लिस्ट में संजू सैमसन टॉप पर हैं। सैमसन ने 2024 हैदराबाद में बांग्लादेश के रिशाद हुसैन के खिलाफ 10 गेंदों में 45 रन बनाए थे। 6. इंग्लैंड ने 13.5 ओवर में टारगेट चेज कियाः- इंग्लैंड ने 13.5 ओवर में 37 गेंद रहते 159 रन का टारगेट हासिल किया। यह 150 या उससे ज्यादा रन के टारगेट में तीसरा सबसे तेज रनचेज है। पहले स्थान पर भारत है। टीम ने न्यूजीलैंड के खिलाफ 2024 में 60 गेंद रहते 150 प्लस का रनचेज किया था। यह टी-20 में भारत की तीसरी सबसे बड़ी हार भी है। टीम को सबसे बड़ी हार 2008 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मिली थी। तब ऑस्ट्रेलिया ने मेलबर्न में 60 गेंद रहते भारत को हराया था। यहां से टॉप मोमेंट्सः-1. वैभव फिर फ्लॉप रहेः- वैभव सूर्यवंशी लगातार तीसरे मैच में फ्लॉप साबित हुए। वे तीसरे ओवर में ही जोफ्रा आर्चर की गेंद पर कैच आउट हुए। ओवर की चौथी गेंद जोफ्रा ने ऑफ-स्टंप से बाहर शॉर्ट ऑफ लेंथ डाली। वैभव ने पुल करने का प्रयास किया। गेंद बल्ले के टॉप एज से लगकर हवा में खड़ी हो गई। मिड-ऑन पर खड़े सैम करन ने आसान कैच पकड़ लिया। 2. श्रेयस ने छक्के से फिफ्टी पूरी कीः-कप्तान श्रेयस ने 15वें ओवर में आदिल राशिद की गेंद पर छक्का लगाकर फिफ्टी पूरी की। राशिद ने ओवर की पांचवी गेंद 85 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से शॉर्ट पिच डाली। जिस पर कप्तान श्रेयस ने डीप स्क्वायर लेग के ऊपर से पुल शॉट खेला और गेंद को बाउंड्री के पार पहुंचा दिया। 3. अक्षर आखिरी गेंद पर रनआउट हुएः-अक्षर पटेल पारी की आखिरी गेंद पर रनआउट हुए। आर्चर ने स्लोअर गेंद डाली। श्रेयस फ्लिक करने से चूके और गेंद थाई-पैड से लगकर पिच पर ही रुक गई। नॉन-स्ट्राइक पर खड़े अक्षर सिंगल के लिए दौड़े। इस दौरान आर्चर ने फुटबॉल की तरह गेंद को किक मारी। गेंद सीधे स्टंप्स पर जा लगी। रिप्ले में दिखा कि अक्षर का बल्ला क्रीज से रह गया।

अरेंज्ड मैरिज की व्यवस्था को एक 'अपग्रेड' की जरूरत है

आए हैं कि मन लगाकर पढ़ो, बड़े सपने देखो, जीवन में कुछ बनो। लेकिन विवाह की उम्र आते-आते यह संदेश बदल जाता है। इसके बाद वे अचानक उनसे यह अपेक्षा करने लगते हैं कि समझौता करना सीखो! मैंने तो इस पटकथा को कई बार घटित होते देखा है। डॉक्टर, आंत्रप्रेन्योर, कलाकार, एकेडमिक बनने का सपना देखने वाली जाने कितनी ही प्रतिभाशाली लड़कियां कॉलेज के बाद- और कई बार तो पढ़ाई पूरी होने से पहले ही अचानक ओझल हो जातीं। उनका विवाह हो जाता। करियर उनके लिए एक जरूरी विकल्प नहीं रह पाता। आर्थिक आत्मनिर्भरता गैर-जरूरी समझी जाने लगती। उनकी तमाम महत्वाकांक्षाओं को समेटकर एक डिजाइनर लहंगे में रख दिया जाता! उनकी पहचान तीन शब्दों तक सिमटकर रह जाती- पत्नी, मां और बहू। यहां यह स्पष्ट करना जरूरी है कि यह अरेंज्ड मैरिज के खिलाफ कोई दलील नहीं है। ऐसे लाखों विवाह आज सुखी, स्नेहपूर्ण और सफल हैं। लेकिन यहां हम अरेंज्ड मैरिज के उस स्वरूप के खिलाफ बात कर रहे हैं, जो आज्ञाकारिता को सद्गुण, अनुपालन को सहमति और कर्तव्य को इच्छा समझने की भूल करता है। बीते कुछ दशकों में भारत में व्यापक बदलाव आया है। महिलाएं विश्वविद्यालयों की मेरिट सूची में शीर्ष स्थान हासिल कर रही हैं, कंपनियों का नेतृत्व कर रही हैं, लड़ाकू विमान दस्तों की कमान संभाल रही हैं, यूनिकॉर्न कंपनियां खड़ी कर रही हैं और उच्चतम न्यायालय में प्रभावी पैरवी कर रही हैं। हम उन पर महत्वपूर्ण फैसलों को लेकर भरोसा करते हैं, लेकिन जीवनसाथी चुनने का निर्णय लेने का भरोसा अब भी नहीं करते।सवाल आज भी वही हैं : लोग क्या कहेंगे? क्या लड़का सही समुदाय से है? क्या लड़की एडजस्ट कर पाएगी? हम कितनी बार किसी लड़की से यह पूछते हैं कि उसकी खुद की इच्छा क्या है? हाल ही के सिया गोयल के मामले को ही लें। सिया के अपराध का किसी भी तरह से बचाव नहीं किया जा सकता, लेकिन इस घटना ने हममें से कई लोगों को कुछ असहज करने वाले सवालों का सामना करने के लिए मजबूर किया है। वो यह है कि जब महिलाओं को महसूस होता है कि उनके जीवन के सबसे बड़े निर्णयों में से एक पर उनका अधिकार नहीं है, तब क्या होता है? ऐसा जीवन जीने के भावनात्मक परिणाम क्या होते हैं, जिसकी रूपरेखा मुख्य रूप से परिवार की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए तैयार की गई हो? हम इन सवालों को किसी त्रासदी के घटित होने के बाद पूछने का जोखिम नहीं उठा सकते। हमें इन्हें विवाह तय होने से पहले ही पूछना होगा। क्योंकि अब हम ऐसी पीढ़ी की महिलाओं को देख रहे हैं, जिनके लिए सहमति का अर्थ केवल विवाह के दिन 'हां' कहना नहीं है। उनके लिए सहमति का अर्थ है भावनात्मक दबाव, सामाजिक बहिष्कार या आजीवन अपराध-बोध के बिना 'ना' कहने की स्वतंत्रता होना। यह तय करने की स्वतंत्रता होना कि विवाह करना है या नहीं, कब करना है और किससे करना है। और हां, ये कोई पश्चिमी विचार नहीं हैं, ये मानवीय विचार हैं! विडम्बना यह है कि हम अपनी बेटियों की शिक्षा पर वर्षों तक निवेश करते हैं, उन्हें स्वतंत्र रूप से सोचने, बड़े स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। लेकिन जैसे ही विवाह की बात आती है, स्वतंत्र सोच अचानक विद्रोह मानी जाने लगती है। समस्या स्वयं अरेंज्ड मैरिज में नहीं है। समस्या इस तथ्य में है कि हमने विवाह संस्था को छोड़कर लगभग हर चीज का आधुनिकीकरण कर लिया है। लेकिन विवाह आज्ञाकारिता का पुरस्कार नहीं होना चाहिए। वह एक स्वतंत्र निर्णय का परिणाम होना चाहिए। परिवार अब भी होने वाले जीवनसाथियों का आपस में परिचय करा सकते हैं। समाज अब भी अपनी परम्पराओं का उत्सव मना सकता है। संस्कृति अब भी कायम रह सकती है। लेकिन जब कोई परम्परा व्यक्ति की स्वतंत्रता को समृद्ध करने के बजाय उसका दमन करने लगे, तो उसमें बदलाव जरूरी हो जाता है।

सबसे मजबूत रिश्ते वो नहीं होते, जो पारिवारिक दबाव या सामाजिक जिम्मेदारी पर टिके हों। वे वो होते हैं, जो दो लोगों के एक-दूसरे को स्वतंत्र रूप से चुनने पर आधारित होते हैं। समस्या स्वयं अरेंज्ड मैरिज में नहीं है। समस्या इस तथ्य में है कि हमने विवाह संस्था को छोड़कर लगभग हर चीज का आधुनिकीकरण कर लिया है। लेकिन विवाह को आज्ञाकारिता का पुरस्कार मात्र नहीं होना चाहिए। वह एक व्यक्ति के स्वतंत्र निर्णय का परिणाम होना चाहिए। (ये लेखिका के अपने विचार हैं,मेघना पंत)

लोगों के दिमाग में आप कैसे 'अनफॉर्गेटेबल' बन सकते हैं?

रामायण में वर्णित निषादराज गुह से कौन-कौन प्रेरणा ले सकता है, जिन्होंने बिना किसी अपेक्षा के लोगों को नदी पार कराई? आधुनिक दौर में जरूरी नहीं कि कोई गुह जैसा नाविक ही बने। वे पुल भी बना सकते हैं। यदि वे ऐसा करते हैं तो लोगों को नदी के एक किनारे से दूसरे तक ही नहीं पहुंचाते, बल्कि किसान की पैदावार को भी नजदीकी बाजार तक पहुंचाते हैं, ताकि वह परिवार को सहयोग कर सके, कोई छात्र अगले गांव के स्कूल जा सके और किसी प्रैग्नेंट महिला को बेहतर मेडिकल केयर मिल सके। यही काम पद्मश्री गिरीश भारद्वाज ने किया था। 1989 में बेंगलुरु से 300 किमी दूर उनके जन्मस्थान अलेड्डी गांव के लोग उनके पास आए और अगले गांव तक पुल बनाने का अनोखा-सा अनुरोध किया। बचपन में भारद्वाज को सीधे पांचवीं कक्षा में एडमिशन लेना पड़ा था, क्योंकि कोई बच्चा इतना लंबा पैदल चल कर नदी पार नहीं कर सकता था। संभवतः उन्हें गुह की याद भी आई होगी। भारद्वाज ने कहा, 'मैंने कभी पुल नहीं बनाया।' फिर भी ग्रामीण बोले कि 'आप इंजीनियर हैं, हल निकाल लेंगे।' और तब उन्होंने चुनौती स्वीकार ली। स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री, सामुदायिक भागीदारी और सरल इंजीनियरिंग सिद्धांतों का इस्तेमाल करके उन्होंने कम खर्च में ही पुल बना दिया। ये खबर नदी से भी तेज गति से फैली। जल्द ही देशभर से सरकारें और समुदाय उन्हें बुलाने लगे। भारत के 'ब्रिज मैन' नाम से मशहूर भारद्वाज का इस मंगलवार को 76 वर्ष की आयु में निधन हो गया। लेकिन ग्रामीण भारत में उनके बनाए 140 से अधिक सस्पेंशन पुल आज भी इंजीनियरिंग से अधिक बड़ी कहानी सुनाते हैं। वे याद दिलाते हैं कि जब आप किसी व्यापक समस्या को हल करते हैं तो पहचान अपने-आप पीछे आती है। भारत का इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है। ई. श्रीधरन को लें, जिन्होंने लाखों लोगों को वह चीज दी, जो सबसे ताकतवर लोग भी नहीं दे सकते- समय। उन्होंने समझा कि भारत के तेजी से बढ़ते शहरों को शानदार इंफ्रास्ट्रक्टर से ज्यादा कुशल सार्वजनिक परिवहन की जरूरत है। कोंकण रेलवे और दिल्ली मेट्रो जैसी परियोजनाओं को असाधारण गति और ईमानदारी के साथ पूरा करके उन्होंने शहरी यातायात की तस्वीर बदल दी। आज लाखों लोग ट्रैफिक में कम फंसते हैं, सुरक्षित यात्रा करते हैं और बेहतर जीवन का अनुभव करते हैं, क्योंकि एक इंजीनियर ने परिवहन समस्या के समाधान पर ध्यान दिया। ऐसे लोगों की सूची बहुत लंबी है। डॉ. वर्गीज कुरियन ने दुग्ध क्रांति का जनक बनने का लक्ष्य नहीं रखा था। उन्होंने महज ग्रामीण भारत की एक बड़ी समस्या का समाधान किया कि डेयरी किसानों को उपज का उचित मूल्य मिले। लाखों लोगों को इसका लाभ मिला और सम्मान अपने-आप मिला। डॉ. बिंदेश्वर पाठक पुरस्कारों के पीछे नहीं दौड़े। उन्होंने सुलभ शौचालयों के जरिए स्वच्छता संकट का समाधान किया। लाखों लोगों को सम्मानजनक जीवन दिया और सार्वजनिक स्वच्छता के प्रति देश की सोच बदली। अरुणाचलम मुरुगनाथम ने भी कभी नहीं सोचा कि उन्हें अंतरराष्ट्रीय ख्याति मिलेगी। उन्होंने एक उपेक्षित समस्या पर ध्यान दिया- ग्रामीण महिलाओं को सस्ते सैनिटरी पैड उपलब्ध कराना। उनके नवाचार ने अनगिनत परिवारों के स्वास्थ्य, शिक्षा और आजीविका को बदल दिया।और इस सूची में राजेंद्र सिंह भी हैं, जिन्हें भारत का वाटरमैन कहते हैं। उन्होंने समझा कि पानी की किल्लत गांवों और लोगों की आजीविका को तबाह कर रही है। केवल बड़े बांधों पर निर्भर रहने के बजाय उन्होंने पारंपरिक जल संरक्षण तकनीकों को पुनर्जीवित किया और नदियों व भूजलस्तर को बहाल करने के लिए समुदायों को एकजुट किया।उनके प्रयासों ने राजस्थान के हजारों गांवों में नई जान फूंक दी। उन्होंने साबित किया कि जब स्थानीय लोग पर्यावरणीय चुनौतियों को हल करने में साझेदार बन जाएं तो टिकाऊ विकास सफल होता है। इन सभी उदाहरणों में एक सिद्धांत समान दिखाई देता है- लाखों लोगों को प्रभावित करने वाली समस्या को पहचानो और समाधान के लिए खुद को समर्पित कर दो। जब कोई टीचर बच्चों को शिक्षा से, कोई डॉक्टर गांव को हेल्थकेयर से, कोई आंत्रप्रेन्योर किसानों को बाजार से, कोई इंजीनियर तकनीक को आमजन से, या कोई व्यक्ति उम्मीद को अवसर से जोड़ता है तो दुनिया हमेशा याद रखती है कि किसने सबसे ज्यादा लोगों के जीवन को बेहतर बनाया। फंडा यह है कि जब कोई व्यक्ति कोई बेहद जरूरी पुल बनाता है तो लोग उसके पेशे को भले भूल जाएं, लेकिन उसे बहुत लंबे समय तक याद रखते हैं। एन. रघुरामन

भविष्य में 'वीकेंड इकॉनमी' लोगों का अधिक ध्यान खींच सकती है

मैं ऐसे शेफ को जानता हूं, जो सोमवार और मंगलवार को घर ही रहते हैं। बुधवार को दिन में अलग-अलग जगह जाकर रिसर्च करते हैं और शाम को रेस्तरां पहुंचते हैं, ताकि हफ्ते के बीच आने वाले ग्राहकों को सेवा दे सकें। फिर गुरुवार से रविवार तक देर रात तक काम करते हैं। मुंबई में लंबे समय से साउथ मुंबई के रेस्तरां और दादर जैसे इलाकों के छोटे आउटलेट्स हफ्ते में केवल चार रात ही खुलते हैं। इससे ग्राहकों में उत्सुकता और मांग हमेशा आपूर्ति से ज्यादा बनी रहती है। ऐसा इसलिए, क्योंकि आंत्रप्रेन्योर्स ने मुंबईकरों का खरीदारी ट्रेंड भांप लिया है, जो वीकेंड पर या वीकेंड के आस-पास के दिनों में ज्यादा खर्च करते हैं। इसी सप्ताह डेटा आउटफिट 'प्राइस' और टाटा संस की ओर से देश के शीर्ष 100 शहरों में उपभोग पैटर्न पर एक अध्ययन में यही बात सामने आई है। इसके अनुसार शहरी उपभोक्ताओं के साप्ताहिक खर्च का दो-तिहाई हिस्सा शनिवार और रविवार को व्यय होता है। किराना और हेल्थकेयर जैसी जरूरी चीजों पर खर्च पूरे सप्ताह समान रहता है, लेकिन फैशन खर्च में स्पष्ट उछाल दिखता है। यह खर्च अन्य दिनों के औसत 529 रुपए से बढ़कर वीकेंड पर औसत 1075 रुपए तक पहुंच जाता है। यह रुझान देश के छह बड़े महानगरों- दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, बेंगलुरु, चेन्नई और हैदराबाद- में ज्यादा स्पष्ट है। बाकी 94 शहर भी बहुत पीछे नहीं हैं। सिर्फ धनबाद जैसे कुछ शहरों में यह स्तर थोड़ा कम है। लंबे समय से जैविक खेती करने वाले किसान न सिर्फ मुंबई और बेंगलुरु जैसे टियर-1 शहरों में, बल्कि इंदौर और जयपुर जैसे टियर-2 शहरों में भी यह काम बहुत अच्छे ढंग से कर रहे हैं। कई किसान केवल रविवार को कारोबार करते हैं, क्योंकि कॉर्पोरेट कर्मचारी अगले कुछ दिनों के लिए ताजा सब्जियों का स्टॉक फ्रिज में रखते हैं। ये किसान एक साथ, एक ही जगह जाकर अपनी साप्ताहिक उपज बेचते हैं। अमेरिका, कनाडा, जापान और यूरोप जैसे विकसित देशों में भी कई स्वतंत्र बुटीक, फैशन, एंटीक या क्राफ्ट स्टोर केवल गुरुवार से रविवार तक ही खुलते हैं। इनके मालिक दैनिक ग्राहकों के बजाय अपार्टमेंट, ऑनलाइन सेल्स या अधिक मार्जिन वाले कारोबार में भरोसा करते हैं। मैंने केरल जैसे राज्यों में कुछ प्राइवेट म्यूजियम देखे हैं, जो जनता के लिए केवल वीकेंड पर और अन्य दिनों में रिक्वेस्ट पर ही खोले जाते हैं। सोच रहे होंगे कि जब किराया और वेतन जैसे फिक्स्ड खर्चे समान रहते हैं तो फिर ये व्यवसाय चार दिन ही क्यों खुलते हैं? इसके कई कारण हैं। हो सकता है यह उस जगह की खासियत के कारण हो, जैसे म्यूजियम। हो सकता है परिसर खुद का हो और कर्मचारी परिवार के सदस्य हों, जो तीन दिन काम करके कमाई करते हैं और बाकी चार दिन जीवन का आनंद लेते हैं। जो लोग किराए के परिसर में कारोबार कर रहे हैं, संभवतः वे इसे ओम्नी-चैनल रिटेल के तौर पर चला रहे हों, जहां वे फिजिकल शॉप के साथ ऑनलाइन बिक्री और 'क्लिक-एंड-कलेक्ट' जैसे ऑफर्स का मिश्रण करते हों। क्या भविष्य में थ्री-डे रिटेल मॉडल आम हो सकता है? कई कॉलेज अपने कोर्सेज में आंत्रप्रेन्योरशिप को बढ़ावा दे रहे हैं तो हो सकता चुनिंदा सेक्टरों में अगले कुछ वर्षों में ऐसा हो। इस मॉडल से जिन कारोबारों को फायदा हो सकता है, उनमें लग्जरी बुटीक, हस्तनिर्मित उत्पाद, डिजाइनर फर्नीचर, आर्ट एंड कलेक्टिबल्स, स्पेशियल्टी फूड और विंटेज क्लोदिंग शामिल हैं। भविष्य के ऐसे वीकेंड स्टोर 'डेस्टिनेशन शॉपिंग' के लिए उपयुक्त हो सकते हैं, जो सोमवार से गुरुवार तक ऑनलाइन ऑर्डर लें और इस दौरान स्टाफ को इन्वेंट्री, प्रोडक्शन और ऑनलाइन ग्राहकों से जुड़ने के लिए इस्तेमाल करें। शुक्रवार, शनिवार और रविवार को खुलने के कारण ऐसे कारोबारों में श्रम लागत कम हो सकती है और वे अधिकतर डिमांड को भी पूरा कर सकते हैं। कुछ तो अपने सीमित समय तक खुले रहने को ही एक्सक्लूसिव ब्रांड एक्सपीरियंस के रूप में प्रचारित करते हैं। यदि आप फूड बिजनेस में उतरना चाहते हैं तो वीकेंड वेंचर शुरू कर कम से कम निवेश में बाजार को परख सकते हैं। फंडा यह है कि वर्क-लाइफ बैलेंस चाहने वाले हाइली-प्रोडक्टिव कर्मचारियों की कमी और वीकेंड पर होने वाले मनमर्जी के खर्च को देखते हुए कई आंत्रप्रेन्योर 'वीकेंड इकॉनमी' पर विचार कर सकते हैं। कुछ रिटेल कारोबारों में तो यह भविष्य का ट्रेंड बन सकता है। एन. रघुरामन

आज के भारत पर एकतरफा समझ कारगर नहीं हो सकती

पिछले महीने नरेंद्र मोदी देश के सबसे लंबे समय तक लगातार पद पर रहने वाले निर्वाचित प्रधानमंत्री बन गए थे। उन्होंने स्वतंत्रता-संग्राम के नायक जवाहरलाल नेहरू को पीछे छोड़ा, जिन्होंने पहले आम चुनाव के बाद 4,398 दिन पद पर कार्य किया था। हालांकि नेहरू ने उससे पहले भी पांच साल तक भारत का नेतृत्व किया था और इंदिरा गांधी भी कुल मिलाकर अधिक समय तक प्रधानमंत्री पद पर रहीं, लेकिन लगातार नहीं। मोदी निःसंदेह स्वतंत्र-भारत के तीन सबसे प्रभावशाली नेताओं में से एक के रूप में उनकी श्रेणी में आते हैं। मोदी पहले ही 1947 के बाद भारत के सबसे गहरे 'री-अलाइनमेंट' का नेतृत्व कर चुके हैं, जिसके चलते हमने आर्थिक आधुनिकीकरण और विकास में चकाचौंध कर देने वाली प्रगति देखी है। हालांकि संस्थाओं की स्वतंत्रता और अल्पसंख्यकों के संरक्षण के प्रश्न पर हमने चुनौतियों का भी सामना किया है। मोदी की सबसे बड़ी उपलब्धि अत्याधुनिक तकनीकी और बुनियादी ढांचे का निर्माण रही है, जिसने 1.4 अरब से अधिक लोगों के जीवन को मौलिक रूप से बदल दिया है। 2014 में मोदी के प्रधानमंत्री बनने से पहले करोड़ों भारतीय औपचारिक बैंकिंग क्षेत्र से बाहर थे। अनौपचारिक विकल्पों पर उनकी निर्भरता ने भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया था। अपने पूर्ववर्ती मनमोहन सिंह द्वारा शुरू की गई पहल पर आगे बढ़ते हुए, मोदी एक नई प्रणाली को अमल में लाए, जिसने पारंपरिक बैंकिंग संरचनाओं को दरकिनार कर दिया। इसके बजाय जीरो-बैलेंस बैंक खातों (जन धन योजना), बायोमेट्रिक पहचान पत्रों (आधार) और मोबाइल नंबरों को जोड़ दिया गया।इस 'जेएएम' त्रिमूर्ति ने ही यूपीआई को जन्म दिया है, जो एक सार्वजनिक, रीयल-टाइम भुगतान प्रोटोकॉल है और सड़क किनारे बैठे विक्रेताओं से लेकर तकनीकी दिग्गजों तक सभी को तुरंत लेनदेन में सक्षम बनाता है। इस दृष्टिकोण ने डायरेक्ट बेनेफिट ट्रांसफर (डीबीटी) प्रणाली का भी विस्तार संभव बनाया, जिसके तहत सब्सिडी और लाभ सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में जमा किए जाते हैं। 2013 में शुरुआत के बाद से ही डीबीटी ने अन्य कल्याणकारी योजनाओं के साथ मिलकर तकरीबन 25 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकालने में मदद की है। मध्यस्थों को बीच में से हटाकर इस प्रणाली ने भ्रष्टाचार पर भी अंकुश लगाया है। हालांकि अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्र अभी भ्रष्टाचार से मुक्त नहीं हैं। बुनियादी ढांचे के विकास के लिए भी युद्ध-स्तर की तत्परता दिखाई गई है और राजमार्गों, हवाई अड्डों और हाई-स्पीड रेल नेटवर्क में रिकॉर्ड-तोड़ निवेश हुआ है। बंदरगाहों का आधुनिकीकरण और विस्तार किया जा रहा है। गांवों में बिजली पहुंचाई जा चुकी है। 10 करोड़ से अधिक घरों में- जो पहले सामुदायिक कुंओं पर निर्भर थे- पाइप के जरिए स्वच्छ पानी पहुंचाया गया है। लेकिन विदेश नीति में मोदी ने नेहरू का ही अनुसरण किया है। वैश्विक भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता में पक्षपातपूर्ण रुख अपनाने के बजाय उन्होंने रणनीतिक स्वायत्तता के प्रति भारत की लंबे समय से चली आ रही प्रतिबद्धता को बनाए रखा है और 'मल्टी-अलाइनमेंट' के सिद्धांत को आगे बढ़ाया है। अलबत्ता गलतियां भी हुई हैं। उदाहरण के लिए, भारत को ईरान युद्ध में खुद को एक तटस्थ पक्ष और संभावित मध्यस्थ के रूप में स्थापित करना चाहिए था, न कि यह धारणा बनने देनी चाहिए थी कि वह अमेरिका और इजराइल के पक्ष में है।

भारत को यूरेनियम सप्लाई करेगा ऑस्ट्रेलिया, परमाणु ऊर्जा और हथियारों के लिए जरूरी, ऑस्ट्रेलियन पीएम से बोले मोदी -'हम आपसे सीख रहे'

मेलबर्न।रिश्तों को क्रिकेट से जोड़ाः पीएम मोदी ने कहा- दोनों

देशों का रिश्ता क्रिकेट जैसा है। हमारी मुलाकातें क्रिकेट की तरह होती हैं। एजेंडे में वनडे जैसा फोकस है, फैसले टी-20 की तरह तेजी से होते हैं और हमारी साझेदारी टेस्ट मैच की तरह लंबी और मजबूत है। पीएम अल्बनीज ने कहा- आज हमने 2015 के भारत-ऑस्ट्रेलिया परमाणु सहयोग समझौते के तहत भारत को यूरेनियम निर्यात की व्यवस्था पर साइन किए हैं। हम दोनों देशों के रिश्तों को और गहरा बनाने के लिए लगातार काम कर रहे हैं। दोनों देशों ने ऑस्ट्रेलिया-भारत साइबर, क्रिटिकल टेक्नोलॉजी और सप्लाई चेन पार्टनरशिप शुरू करने पर सहमति जताई है। इसके तहत दोनों देश आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस , क्वांटम कंप्यूटिंग, सेमीकंडक्टर, साइबर सिक्योरिटी और डिजिटल रेजिलिएंस जैसे क्षेत्रों में एकसाथ रिसर्च करेंगे। भारत क्यों खरीद रहा यूरेनियमः-ऑस्ट्रेलिया पांचवा देश है, जिससे भारत यूरेनियम खरीद रहा है। इसके पीछे क्या वजह है, सवाल-सवाल 1ः भारत को यूरेनियम की जरूरत क्यों है। जवाबः भारत को परमाणु बम नहीं बिजली बनाने के लिए यूरेनियम की जरूरत है। का टारगेट 2070 तक नेट जीरो उत्सर्जन है। इसलिए कोयले से बिजली बनाने पर निर्भरता कम करना चाहता है। नेट जीरो मतलब जितनी कार्बन डाईऑक्साइड वातावरण में छोड़ रहा है, उतनी ही पेड़ लगाकर सोख ले। सवाल 2ः यूरेनियम से बिजली कैसे बनती है। जवाबः रिएक्टर में यूरेनियम के परमाणु का विखंडन करते हैं। इससे गर्मी पैदा होती है। गर्मी से पानी को भाप में बदला जाता है। भाप के प्रेशर से टर्बाइन चलाकर बिजली बनाते हैं। सवाल 3ः क्या इसी यूरेनियम को बचाकर परमाणु बम बनाया जा सकता है? जवाबः बिजली बनाने वाला यूरेनियम लो एनरिच्ड, यानी कम प्योर होता है। परमाणु बम बनाने के लिए हाई एनरिच्ड, यानी 90फीसदी या इससे अधिक प्योर यूरेनियम चाहिए। सवाल 4ः परमाणु बम बनाना क्या बहुत कठिन है? जवाबः यूरेनियम को गैस सेंट्रीफ्यूज जैसी टेक्नीक से एनरिच्ड किया जा सकता है। यह टेक्नीक बहुत जटिल, महंगी और बड़े इंडस्ट्रियल स्ट्रक्चर वाली होती है। सवाल 5ः यूरेनियम की निगरानी कौन करता है? जवाबः इसके लिए अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था है। मुख्य संस्था है- इंटरनेशनल एटॉमिक एनर्जी एजेंसी। यह जांचती है कि परमाणु सामग्री का इस्तेमाल शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए हो रहा है या नहीं। यह निरीक्षण करती है, पूरा रिकॉर्ड रखती है, निगरानी उपकरण लगाती है।

12फीसदी से ज्यादा अल्कोहल वाली दवा बिना प्रिस्क्रिप्शन नहीं मिलेगी, मेडिकल स्टोर्स को 3 साल का रिकॉर्ड रखना होगा

नयी दिल्ली। सवाल-2ः एक मरीज के तौर पर क्या मेरे लिए

यह दवाएं बैन या असुरक्षित हो गई हैं? जवाबः बिल्कुल नहीं। इसका यह मतलब कतई नहीं है कि ये दवाएं असुरक्षित हैं या इन पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। यह सिर्फ सुरक्षा मानक है। अगर डॉक्टर ने यह दवा लिखी है, तो आपको यह पहले की तरह मेडिकल स्टोर से मिल जाएगी, बस आपको डॉक्टर की पर्ची दिखानी होगी। मेडिकल फैक्ट्स और हेल्थ इंपैक्टः-सवाल-1ः दवाओं में अल्कोहल का इस्तेमाल क्यों किया जाता है, क्या यह खतरनाक है? जवाबः दवाओं में सीमित मात्रा में एथिल अल्कोहल का इस्तेमाल एक सॉल्वेंट या प्रिजर्वेटिव (दवा को सुरक्षित रखने और घोलने) के रूप में किया जाता है, जो क्लीनिकल तौर पर जरूरी है। यह आमतौर पर हानिकारक नहीं होता। हालांकि, जर्नल ऑफ मेडिकल टॉक्सिकोलॉजी की 2024 की एक रिपोर्ट के मुताबिक, अगर ऐसी दवाओं का बिना डॉक्टरी सलाह के या जरूरत से ज्यादा सेवन किया जाए, तो यह बच्चों, बुजुर्गों और लिवर के मरीजों के लिए गंभीर साइड इफेक्ट्स पैदा कर सकता है। सवाल-2ः इस मामले में वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन की क्या गाइडलाइन है?जवाबः वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन भी हमेशा दवाओं के तर्कसंगत और सीमित इस्तेमाल पर जोर देता है। इसके तहत दवाओं को केवल तभी लिखा और बेचा जाना चाहिए, जब उनकी वाकई में क्लीनिकल जरूरत हो। शेड्यूल एच1 और फ्यूचर इंपैक्टः-सवाल-1ः यह 'शेड्यूल एच1' क्या है और इसमें कौन सी दवाएं आती हैं? जवाबः ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स रूल्स के तहत 'शेड्यूल एच1' को साल 2013 में पेश किया गया था। इसका मकसद उन दवाओं की सख्त निगरानी करना था, जिनके दुरुपयोग की संभावना ज्यादा होती है। शुरुआत में इसमें थर्ड और फोर्थ जनरेशन की एंटीबायोटिक्स, टीबी की दवाएं और आदत लगाने वाली दवाएं शामिल थीं। अब इस लिस्ट का दायरा बढ़ाया जा रहा है। सवाल-2ः इस फैसले से पब्लिक हेल्थ सेक्टर को लंबे समय में क्या फायदा होगा?जवाबः इस कदम से भारत में ड्रग रेगुलेटरी सिस्टम और मजबूत होगा। दवाओं की ट्रेसेबिलिटी बढ़ेगी यानी यह पता लगाना आसान होगा कि कौन सी दवा कहां और किसे बेची गई। इससे दवाओं के गलत इस्तेमाल पर रोक लगेगी और मरीजों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सकेगी।

वकील ने सीजेआई का नाम लेकर अपशब्द कहे, आदेश देने लगा, फाइल फेंकी- सिक्योरिटी ने बाहर निकाला

नयी दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट में शुक्रवार को सुनवाई के दौरान एक वकील ने हंगामा किया। सीजेआई सूर्यकांत को अपशब्द कहे और फाइल भी फेंकी। इस दौरान सीजेआई कोर्ट रूम में मौजूद नहीं थे। दरअसल, यह केस जस्टिस के. वी. विश्वनाथन, जस्टिस आलोक अराधे की बेंच के सामने सुना जा रहा था। मामला इलाहाबाद हाईकोर्ट के एक फैसले को चुनौती की याचिका का था। इस पर याचिकाकर्ता ही पैरवी कर रहा था। जब उस याचिकाकर्ता वकील ने अभद्रता शुरू की, तब कोर्ट रूम में कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया। सिक्योरिटी ने उसे कोर्ट रूम से बाहर निकाल दिया। हंगामे के बाद जज बोले- हमें वकील से सहानुभूतिः- सुनवाई शुरू होते ही याचिकाकर्ता वकील ने कहा, 'न्यायिक अधिकारी महोदय, मैं आपको आदेश देता हूं कि आप लखनऊ के एसीपी के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने का आदेश दें। इस पर जस्टिस केवी विश्वनाथन ने हैरानी जताते हुए पूछा, आप मुझे

आदेश दे रहे हैं? इसके जवाब में याचिकाकर्ता ने कहा, 'मेरी तरफ से बस इतना ही। सब कुछ रिकॉर्ड पर है।' इसके बाद उसने केस की फाइल हवा में फेंक दी और गाली-गलौज करने लगा। हंगामे के बाद जस्टिस केवी विश्वनाथन ने कहा- 'वह बहुत परेशान है, यह सब हताशा है। हमें उसके लिए केवल सहानुभूति है। हम उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करना चाहते। जहां तक मामले की बात है, हमें विवादित आदेश में दखल देने का कोई ठोस आधार नहीं मिला।' कोर्ट ने नहीं लिया एक्शन, लेकिन बार काउंसिल कर सकता है कार्रवाईः- इस वकील के खिलाफ बार काउंसिल भी कार्रवाई कर सकता है। दरअसल, अगर कोई वकील अपने पेशे के नियमों का पालन नहीं करता या गलत आचरण करता है, तो उसके खिलाफ एडवोकेट्स एक्ट, 1961 के तहत कार्रवाई हो सकती है। पहले शुरुआती जांच होती है, अगर जांच में आरोप सही पाए जाते हैं, तो उसे बार काउंसिल की अनुशासनात्मक समिति के पास भेजा जाएगा। वकील दोषी मिला तो उसे चेतावनी दी जा सकती है, कुछ समय के लिए वकालत करने से रोका जा सकता है।

इजराइल बोला- ईरान को परमाणु बम नहीं बनाने देंगे बल्कि जरूरत पड़ी तो फिर हमला भी करेंग

खामेनेई की शोकसभा में जा सकते हैं नए सुप्रीम लीडर मुजतबा

तेहरान/वॉशिंगटन डीसी। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा है कि इजराइल किसी भी हाल में ईरान को परमाणु हथियार हासिल नहीं करने देगा। उन्होंने कहा कि ईरान के खिलाफ जंग अभी खत्म नहीं हुई है और जरूरत पड़ने पर फिर

हमला कर सकते हैं। इजराइली वायुसेना के एक समारोह में नेतन्याहू ने कहा, 'अगर हमने कार्रवाई नहीं की होती तो ईरान अब तक परमाणु हथियार बना चुका होता।' साथ ही, इजराइली मीडिया में दावा किया गया है कि इजराइल ईरान पर फिर हमले के लिए तैयार है, लेकिन अंतिम मंजूरी का इंतजार कर रहा है। दूसरी ओर, ईरान के नए सुप्रीम लीडर मुजतबा खामेनेई शनिवार को पहली बार सार्वजनिक रूप से नजर आ सकते हैं। ईरान की तस्नीम न्यूज एजेंसी के मुताबिक, वे कोम शहर की हजरत मासूमेह दरगाह में अपने पिता और पूर्व सुप्रीम लीडर अली खामेनेई की शोकसभा की अगुवाई करेंगे। पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्सः-अमेरिका ने बुशहर परमाणु ठिकाने के पास हमला कियाः ईरान के एक अधिकारी ने बताया कि अमेरिका ने बुशहर परमाणु ठिकाने को निशाना बनाते हुए हवाई हमला किया। हालांकि फैसिलिटी को कोई नुकसान नहीं पहुंचा। ईरान ने बहरीन, कुवैत और जॉर्डन में अमेरिकी ठिकानों पर मिसाइलें दागीं, ईरान ने अमेरिका के हमलो के बाद जवाबी कार्रवाई करते हुए बहरीन, कुवैत और जॉर्डन में अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर मिसाइलें दागीं। हालांकि, इन देशों ने कई मिसाइलों और ड्रोन को मार गिराने का दावा किया है। अमेरिका ने ईरान में चीन-रूस से जुड़े पुल पर हमला कियाः ईरान ने दावा किया है कि अमेरिका ने उत्तरी ईरान में चीन और रूस से जुड़े एक रणनीतिक रेलवे पुल पर क्रूज मिसाइल से हमला किया। ईरान ने इसे युद्ध अपराध बताया। होर्मुज स्ट्रेट से तेल टैंकरों की आवाजाही लगभग ठपः रॉयटर्स के मुताबिक, अमेरिका-ईरान के बीच तनाव दोबारा बढ़ने के बाद होर्मुज स्ट्रेट में जहाजों की आवाजाही गुरुवार को ठप रही। इससे वैश्विक तेल सप्लाई को लेकर चिंता बढ़ी और कच्चे तेल की कीमतों में करीब 1फीसदी की बढ़ोतरी हुई। ईरान ने एक रात में 1 करोड़ बैरल कच्चा तेल भेजाः अल जजीरा के मुताबिक, ईरान ने एक ही रात में कम से कम 1 करोड़ बैरल कच्चा तेल और फ्यूल ऑयल निर्यात के लिए भेज दिया। अमेरिका की नौसैनिक नाकाबंदी फिर से लागू होने की आशंका के चलते यह कदम उठाया गया। ब्रिटेन की समुद्री सुरक्षा एजेंसी ने कहा है कि होर्मुज स्ट्रेट में सुरक्षा खतरा अब भी सबसे ऊंचे स्तर पर बना हुआ है। एजेंसी ने यह चेतावनी अमेरिका और ईरान के बीच हालिया सैन्य तनाव बढ़ने के बाद जारी की है। इसके चलते इस अहम समुद्री रास्ते से गुजरने वाले जहाजों के लिए जोखिम बढ़ गया है।मिडिल ईस्ट मामलों के एक्सपर्ट वाइल अव्वाद ने कहा कि अमेरिका और ईरान दोनों ही इस समय युद्ध को और आगे नहीं बढ़ाना चाहते। उनके मुताबिक, दोनों देश फिलहाल सिर्फ एक-दूसरे के हमलों का जवाब दे रहे हैं। एएनआई से बातचीत में अव्वाद ने कहा कि दोनों पक्ष पूरे युद्ध से बचना चाहते हैं, इसलिए उनके हमले सीमित हैं। बैकडोर कूटनीतिक बातचीत भी तेजी से चल रही है। तुर्किये, कतर, सऊदी अरब और दूसरे अरब देश दोनों पक्षों को बातचीत की मेज पर लाने की कोशिश कर रहे हैं।

करेंट अफेयर्स

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच यूरेनियम की खरीद को लेकर डील हुई

नयी दिल्ली। 9 जुलाई को भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच

यूरेनियम को लेकर डील हुई। ये डील पीएम नरेंद्र मोदी और ऑस्ट्रेलिया के पीएम एंथनी अल्बनीज की वार्ता के दौरान हुई। भारत और ऑस्ट्रेलिया मिलकर क्रिटिकल मिनरल्स कॉरिडोर भी विकसित करेंगे। ऑस्ट्रेलिया भारत को सिविल न्यूक्लियर रिएक्टरों के लिए यूरेनियम उपलब्ध कराएगा। इससे ऑस्ट्रेलिया अब भारत के शांतिपूर्ण परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के लिए यूरेनियम की आपूर्ति कर सकेगा। समझौता भारत के 2047 तक 100 गीगावाट परमाणु ऊर्जा क्षमता के लक्ष्य को समर्थन देगा। दोनों देशों ने क्रिटिकल मिनरल्स, ग्रीन हाइड्रोजन, समुद्री सुरक्षा और रक्षा सहयोग बढ़ाने पर भी सहमति जताई। मेलबर्न में पीएम मोदी और ऑस्ट्रेलियाई पीएम एंथनी अल्बनीज ने जॉइंट प्रेस कॉन्फ्रेंस में डिफेंस, ट्रेड, एनर्जी, स्पेस और क्रिटिकल मिनरल्स समेत कई क्षेत्र में समझौतों की घोषणा की।

डीआरडीओ ने पिनाका लॉन्ग-रेंज गाइडेड रॉकेट की सफल टेस्टिंग की

नयी दिल्ली। 8 जुलाई को

डीआरडीओ ने ओडिशा के चांदीपुर से पिनाका लॉन्ग-रेंज गाइडेड रॉकेट (एलआरजीआर) का सफलतापूर्वक परीक्षण किया। सभी युद्धाभ्यास पूरे किए और रॉकेट ने उड़ान के दौरान तय टारगेट पर सटीक वार किया। इस नए गाइडेड वेरिएंट को भारतीय सेना में पहले से इस्तेमाल हो रहे 'पिनाका लॉन्चर' से ही दागा गया है। एलआरजीआर को एक ही लॉन्चर के जरिए अलग-अलग रेंज वाले पिनाका वेरिएंट्स से लॉन्च किया जा सकता है। पिनाका एलआरजीआर को डीआरडीओ की आर्मामेंट रिसर्च एंड डेवलपमेंट एस्टेब्लिशमेंट लैब और हाई एनर्जी मैटेरियल्स रिसर्च लेबोरेटरी ने मिलकर डिजाइन किया है।

भारत के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली आईसीसी हॉल ऑफ फेम में शामिल होंगे

नयी दिल्ली। 10 जुलाई को भारत के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली

को आईसीसी हॉल ऑफ फेम में शामिल करने का ऐलान किया। इसकी घोषणा 11 जुलाई को स्कॉटलैंड के एडिनबर्ग में आईसीसी की सालाना कॉन्फ्रेंस में होगी। गांगुली हॉल ऑफ फेम में जगह बनाने वाले भारत के 12वें क्रिकेटर होंगे। मैच फिक्सिंग विवाद के बाद 2000 में गांगुली ने भारतीय टीम की कप्तानी संभाली थी। गांगुली की कप्तानी में भारत ने 2002 चैंपियंस ट्रॉफी जीती और 2003 वनडे वर्ल्ड कप का फाइनल खेला। 2004 में पाकिस्तान में ऐतिहासिक टेस्ट सीरीज जीती और ऑस्ट्रेलिया की लगातार 16 मैचों की टेस्ट जीत का रिकॉर्ड भी तोड़ा।गांगुली ने भारत के लिए 113 टेस्ट में 7212 रन बनाए, जिसमें 16 शतक शामिल हैं। 311 वनडे में उनके नाम 11363 रन और 22 शतक दर्ज हैं। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 132 विकेट भी लिए। बल्लेबाजी के बाद वे बीसीसीआई अध्यक्ष और वर्तमान में क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ बंगाल (सीएबी) के अध्यक्ष भी रहे हैं। हॉल ऑफ फेम-हॉल ऑफ फेम इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) का सबसे बड़ा व्यक्तिगत सम्मान होता है। इसमें उन महान खिलाड़ियों, अंपायर्स या प्रशासकों को शामिल किया जाता है, जिन्होंने अपने अंतरराष्ट्रीय करियर में असाधारण प्रदर्शन किया हो। किसी भी खिलाड़ी को इस हॉल ऑफ फेम में शामिल करने से पहले उसके संन्यास लिए कम से कम 5 साल पूरे होना जरूरी होता है। अब तक भारत के 12 खिलाड़ियों को ये सम्मान दिया जा चुका है, इसमें सचिन तेंदुलकर, राहुल द्रविड़, कपिल देव और एमएस धोनी शामिल हैं।

चेस प्लेयर अश्वथ एस 98वें ग्रेंडमास्टर बने

नयी दिल्ली। 9 जुलाई को 17 साल के अश्वथ एस. ने

अपना तीसरा और आखिरी ग्रैंडमास्टर (जीएम) नॉर्म हासिल किया। अश्वथ ने पुणे इंटरनेशनल ग्रैंडमास्टर राउंड रॉबिन 2026 जीतकर भारत के 98वें शतरंज ग्रैंडमास्टर बन गए हैं। वर्तमान में उनकी स्टैंडर्ड फिडे रेटिंग 2517 है। अश्वथ ने इस साल की शुरुआत में जर्मनी में ग्रेनके ओपन ए में अपना पहला ग्रैंडमास्टर नॉर्म हासिल किया था। अश्वथ ने नौ मैचों में 8 पॉइंट के साथ टाई-ब्रेक पर टूर्नामेंट जीता और 2779 की हाईएस्ट रैंकिंग दर्ज की। अश्वथ ने 2023 में इंटरनेशनल मास्टर (आईएम) का खिताब हासिल किया था और 2500 अंकों की फिडे रेटिंग को पा लिया था। कन्याकुमारी में जन्मे अश्वथ महज 3 साल की उम्र से चेस खेल रहे हैं। उनके पिता एसी शिवा उनके पहले कोच भी थे। ग्रैंडमास्टर चेस का सबसे बड़ा इंटरनेशनल खिताब है, जिसे एफआईडीई देता है। ग्रांड मास्टर बनने के लिए तीन ग्रांड मास्टर नॉर्म हासिल करने जरूरी होते हैं। इसके साथ ही कैंडीडेट को 2500 या उससे ज्यादा एफआईडीई रेटिंग हासिल करनी होती है।

दुनिया का पहला कमर्शियल परमाणु-संचालित उपग्रह लॉन्च

नयी दिल्ली। 8 जुलाई को SpaceX ने दुनिया के पहले कमर्शियल परमाणु-संचालित उपग्रह BOHR (Betavoltaic ORital High-

Reliability) को सफलतापूर्वक लॉन्च किया। ये लॉन्चिंग ट्रांसपोर्टर-17 मिशन के तहत की गई है और ये उपग्रह अमेरिकी कंपनी सिटी लैब्स ने विकसित किया है।ये उपग्रह एक छोटा सा 'क्यूबसैट' है, जिसका आकार लगभग एक सॉफ्टबॉल जितना है। इसे 80 अन्य पेलोड्स के साथ SpaceX के फाल्कन 9 रॉकेट के जरिये कक्षा में स्थापित किया गया। ये दुनिया का पहला कमर्शियल परमाणु-संचालित उपग्रह माना जा रहा है। वर्तमान BOHR उपग्रह के सामान्य संचालन के लिए अभी भी सौर पैनलों का उपयोग किया जाता है। अंतरिक्ष में परमाणु ऊर्जा के व्यावसायिक उपयोग की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।ये भविष्य में चंद्रमा के स्थाई अंधकार वाले क्षेत्रों और गहरे अंतरिक्ष अभियानों में उपयोगी हो सकती है। ये लंबे समय के अंतरिक्ष मिशनों के लिए ज्यादा विश्वसनीय ऊर्जा स्रोत विकसित करने की दिशा में एक बड़ा कदम है:-BOHR (Betavoltaic ORital High-Reliability) BOHR में नैनो ट्रिटियम बेटावोल्टिक तकनीक का उपयोग किया गया है। इसमें ट्रिटियम के रेडियोधर्मी क्षय से निकलने वाले बीटा कणों को सीधे विद्युत ऊर्जा में बदला जाता है।ये तकनीक लंबे समय तक लगातार बिजली उपलब्ध करा सकती है, विशेषकर उन जगहों पर जहां सूर्य का प्रकाश बहुत कम या नहीं पहुंचता है। इस तरह की परमाणु बैटरियां भविष्य में उन जगहों पर काम आएंगी, जहां सूर्य की रोशनी नहीं पहुंचती हैं। उदाहरण के लिए, चंद्रमा के स्थाई रूप से अंधेरे वाले हिस्से या गहरे अंतरिक्ष के मिशन में काम आएगा।

अरशद वारसी ने मरती हुई मां को नहीं पिलाया पानी-आज भी पछताते हैं, कभी बेची लिपस्टिक

मुंबई। 14 साल की उम्र में अरशद वारसी ने ऐसा दर्द देखा, जिसने उन्हें वक्त से पहले बड़ा बना दिया। डॉक्टर की सलाह पर उन्होंने मां को पानी नहीं दिया था और कुछ घंटों बाद उनका निधन हो गया। इस बात का मलाल उन्हें

आज भी है। माता-पिता के निधन के बाद घर की जिम्मेदारी उनके कंधों पर आ गई और उन्हें स्कूल छोड़ना पड़ा। उन्होंने बसों और घर-घर जाकर लिपस्टिक बेची, फोटो लैब में नौकरी की और छोटे-छोटे काम करके गुजारा किया। हालात इतने मुश्किल थे कि कई बार भविष्य अंधेरे में नजर आता था। लेकिन इसी संघर्ष ने उन्हें ऐसा कलाकार बनाया, जिसने 'मुन्ना भाई एमबीबीएस' के 'सर्किट' बनकर करोड़ों लोगों का दिल जीता। उन्हें भी इस किरदार की इतनी बड़ी सफलता की उम्मीद नहीं थी। बचपन में खुशहाल जिंदगी, फिर सब कुछ बदल गया-19 अप्रैल 1968 को मुंबई में जन्मे अरशद वारसी का शुरुआती बचपन आर्थिक रूप से अच्छा था। उनके पिता अहमद अली खान वारसी शायर और गायक थे। परिवार का जीवन आरामदायक था, लेकिन समय के साथ हालात बिगड़ने लगे। कानूनी विवादों और आर्थिक नुकसान के कारण परिवार की संपत्ति चली गई। बड़ा घर छोड़कर उन्हें छोटे घरों में रहना पड़ा। 14 साल की उम्र में अनाथ हो गए:-अरशद की जिंदगी का सबसे बड़ा झटका तब लगा, जब उन्होंने कम उम्र में अपने माता-पिता को खो दिया। राज शमानी के पॉडकास्ट में उन्होंने बताया कि वह सिर्फ 14 साल के थे, जब उनके सिर से माता-पिता का साया उठ गया। इस घटना ने उन्हें उम्र से पहले जिम्मेदार बना दिया। अरशद ने कहा था- 'मैं अपनी उम्र के हिसाब से काफी मैच्योर हो गया था। पिताजी के जाने के बाद हालात लगातार खराब होते गए। मां के निधन के बाद मैं तुरंत रो भी नहीं पाया, क्योंकि मुझे लगा कि अब सब कुछ मुझे ही संभालना है। कई हफ्तों बाद मैं टूटकर रोया।' मां की आखिरी याद आज भी नहीं भूले:- अरशद ने बताया कि उनकी मां साधारण गृहिणी थीं और बहुत अच्छा खाना बनाती थीं। उन्हें किडनी फेल होने की बीमारी हो गई थी, इसलिए नियमित डायलिसिस कराना पड़ता था।

इलाज के दौरान डॉक्टरों ने सख्त हिदायत दी थी कि उन्हें पानी नहीं देना है। लेकिन उनकी मां बार-बार पानी मांगती थीं और अरशद ने डॉक्टरों की सलाह मानते हुए हर बार मना कर दिया। उन्होंने कहा कि निधन से ठीक पहले वाली रात मां ने उन्हें बुलाकर पानी मांगा था, लेकिन उन्होंने पानी नहीं दिया। उसी रात उनकी मां का निधन हो गया। अरशद के मुताबिक, यह घटना आज भी उन्हें अंदर तक झकझोर देती है। उन्होंने कहा कि उस समय उन्हें लगता था कि अगर उन्होंने मां को पानी पिला दिया और उसके बाद उनका निधन हो गया, तो पूरी जिंदगी खुद को जिम्मेदार मानते। अब उन्हें लगता है कि शायद मां की आखिरी इच्छा पूरी कर देनी चाहिए थी। उनका मानना है कि कई बार परिवार वाले मरीज की इच्छा से ज्यादा अपने अपराधबोध के आधार पर फैसले लेते हैं।

आर्थिक तंगी के कारण पढ़ाई छोड़नी पड़ी, बेची लिपस्टिकः-माता-पिता के निधन के बाद घर चलाने की जिम्मेदारी अरशद के कंधों पर आ गई। आर्थिक संकट इतना गहरा था कि उन्हें दसवीं के बाद पढ़ाई छोड़नी पड़ी। गुजारा करने के लिए उन्होंने कई छोटे-मोटे काम किए। उन्होंने कॉस्मेटिक्स कंपनी में डोर-टू-डोर सेल्समैन के तौर पर काम किया। कई रिपोर्टों के मुताबिक वे मुंबई की बसों में लिपस्टिक और कॉस्मेटिक उत्पाद भी बेचते थे। अरशद वारसी कहते हैं, 'मैं घर-घर जाकर लिपस्टिक बेचता था। कई लोग दरवाजा बंद कर देते थे, लेकिन उसी दौर ने मुझे लोगों से बात करना और जिंदगी का सामना करना सिखाया।' उन्होंने बताया कि उस दौर में वह सप्ताहभर मेहनत करके कुछ सौ रुपए ही कमा पाते थे, जबकि मां के इलाज पर हर सप्ताह लगभग 800 रुपए खर्च हो जाते थे। उन्होंने कहा, 'मैं वीकेंड पर म्यूजिकल शो करता था, जिसके 175 रुपए मिलते थे। तभी मुझे समझ आया कि जिंदगी में आर्थिक रूप से मजबूत होना कितना जरूरी है।' अरशद वारसी (एक्टर):- 'मैंने जिंदगी में बहुत कुछ देखा है। शायद इसलिए आज छोटी-छोटी चीजों की भी कद्र करता हूं।' डांस ने बदली जिंदगीः-संघर्ष के बीच अरशद का डांस का शौक कभी नहीं छूटा। उन्हें बचपन से नृत्य में रुचि थी। धीरे-धीरे उन्होंने डांस को ही करियर बनाने का फैसला किया। डांस के प्रति जुनून ने उनकी जिंदगी बदल दी। वे अकबर सामी के डांस ग्रुप से जुड़े। 1991 में ऑल इंडिया डांस प्रतियोगिता जीती और 1992 में लंदन में आयोजित वर्ल्ड डांस चैंपियनशिप के मॉडर्न जैज वर्ग में चौथा स्थान हासिल किया। इसके बाद उन्होंने डांस स्टूडियो शुरू किया और फिल्मों में कोरियोग्राफी करने लगे। उन्होंने 'रूप की रानी चोरों का राजा' के टाइटल ट्रैक के अलावा 'ठिकाना' और 'काश' जैसी फिल्मों में भी कोरियोग्राफी की। यहीं से उनकी जिंदगी ने नया मोड़ लिया। जया बच्चन की नजर पड़ी, मिल गया पहला मौकाः- कोरियोग्राफर के रूप में काम करते समय उनकी मुलाकात कई फिल्मी हस्तियों से हुई। इसी दौरान जया बच्चन ने उनकी प्रतिभा देखकर अमिताभ बच्चन कॉरपोरेशन लिमिटेड (एबीसीएल) की फिल्म 'तेरे मेरे सपने' में अभिनय का मौका दिया। 1996 में रिलीज हुई 'तेरे मेरे सपने' से अरशद वारसी ने बतौर अभिनेता बॉलीवुड में कदम रखा। फिल्म अमिताभ बच्चन कॉरपोरेशन लिमिटेड (एबीसीएल) के बैनर तले बनी थी और निर्देशक जॉय ऑगस्टीन थे। इससे पहले वह बतौर कोरियोग्राफर पहचान बना चुके थे। उनकी एंट्री किसी फिल्मी परिवार की वजह से नहीं, बल्कि प्रतिभा के दम पर हुई। अरशद ने कहा था कि वह अमिताभ बच्चन, जया बच्चन और जॉय ऑगस्टीन के आभारी रहेंगे, जिन्होंने उन पर भरोसा किया। पहली फिल्म के बाद नहीं मिला मनचाहा कामः-'तेरे मेरे सपने' के बाद अरशद को लगा था कि उनके करियर की रफ्तार तेज होगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। अगले कुछ वर्षों में उन्होंने 'हीरो हिंदुस्तानी', 'होगी प्यार की जीत', 'मुझे मेरी बीवी से बचाओ', 'जानी दुश्मनः एक अनोखी कहानी' समेत कई फिल्मों में काम किया, लेकिन अधिकांश फिल्में बॉक्स ऑफिस पर अपेक्षित सफलता हासिल नहीं कर सकीं। इस दौरान अच्छे किरदार भी कम मिले और उन्हें लगा कि इंडस्ट्री में खुद को दोबारा साबित करना पड़ रहा है। आउटसाइडर होने की कीमत चुकानी पड़ीः-द इंडियन एक्सप्रेस को दिए इंटरव्यू में अरशद वारसी ने फिल्म इंडस्ट्री में बाहरी कलाकारों के संघर्ष पर बात की थी। उन्होंने कहा था- 'इंडस्ट्री का एक वर्ग ऐसा है, जिसे हिट फिल्म देने के लिए कई मौके मिलते हैं। लेकिन जो फिल्मी परिवार से नहीं आते, उनके लिए एक फ्लॉप के बाद फिर से संघर्ष शुरू हो जाता है।' अरशद ने कहा कि समय के साथ उन्होंने इस सच्चाई को स्वीकार कर लिया और शिकायत करने के बजाय अपने काम पर ध्यान देना चुना। लगा था 'मुन्ना भाई एमबीबीएस' आखिरी फिल्म साबित होगीः-2003 में जब निर्देशक राजकुमार हीरानी ने उन्हें 'मुन्ना भाई एमबीबीएस' में 'सर्किट' का रोल ऑफर किया, तब अरशद को लगा कि यह उनके करियर की आखिरी फिल्म साबित हो सकती है। उन्हें यकीन नहीं था कि सर्किट का किरदार इतना लोकप्रिय हो जाएगा। अरशद वारसी कहते हैं- 'मुझे पूरा यकीन था कि 'मुन्ना भाई एमबीबीएस' के बाद मेरा करियर खत्म हो जाएगा। मुझे लगा था कि यह रोल बहुत छोटा है और इससे मुझे कोई फायदा नहीं होगा।' उन्होंने बताया कि उस समय संजय दत्त भी फिल्म की सफलता को लेकर पूरी तरह आश्वस्त नहीं थे। 'सर्किट' का रोल शुरुआत में पसंद नहीं आया थाः- अरशद वारसी कहते हैं, 'अगर आप सिर्फ किरदार को देखें, तो वह बहुत बड़ा रोल नहीं था। अगर फिल्म नहीं चलती, तो उस किरदार का कोई मतलब नहीं रह जाता।' उन्होंने 'सर्किट' को 'God-given role' बताते हुए कहा कि उनकी किस्मत अच्छी थी कि फिल्म सुपरहिट हुई और दर्शकों ने सर्किट और मुन्ना भाई की जोड़ी को दिल से अपनाया। सर्किट का नाम पहले खुजली थाः- कम लोग जानते हैं कि 'मुन्ना भाई एमबीबीएस' में सर्किट का किरदार पहले अलग था। उसका नाम 'खुजली' रखा गया था। अरशद वारसी ने राजकुमार हीरानी से नाम बदलने का सुझाव दिया। उन्होंने किरदार के कपड़े, हेयरस्टाइल और कई दृश्यों में भी अपने सुझाव दिए। यही बदलाव आगे चलकर 'सर्किट' की पहचान बन गए। लोग नाम नहीं, 'सर्किट' कहकर बुलाने लगेः-'मुन्ना भाई एमबीबीएस' की सफलता के बाद लोग अरशद वारसी को उनके असली नाम से कम और 'सर्किट' के नाम से ज्यादा पहचानने लगे। द इंडियन एक्सप्रेस से बातचीत में उन्होंने बताया कि लद्दाख में बाइक ट्रिप के दौरान एक व्यक्ति ने कहा कि उनकी शक्ल अरशद वारसी जैसी लगती है और उन्हें उनकी मिमिक्री करके पैसे कमाने चाहिए। अरशद ने अपनी पहचान नहीं बताई और इस घटना का आनंद लिया। 'लगे रहो मुन्नाभाई' ने बनाई स्थायी पहचानः-2006 में आई 'लगे रहो मुन्नाभाई' ने सर्किट के किरदार को और लोकप्रिय बना दिया। इसके बाद अरशद वारसी सिर्फ कॉमेडी अभिनेता नहीं रहे, बल्कि बहुमुखी कलाकार के रूप में पहचान बनाई। उन्होंने 'गोलमाल' सीरीज, 'धमाल', 'इश्किया' और 'जॉली एलएलबी' जैसी फिल्मों से अपनी अभिनय क्षमता साबित की। 'गोलमाल' ने बनाया कॉमेडी का बड़ा चेहराः-रोहित शेट्टी की 'गोलमाल' सीरीज में अरशद वारसी ने माधव का किरदार निभाया। अजय देवगन, तुषार कपूर और श्रेयस तलपड़े जैसे कलाकारों के बीच भी उनकी कॉमिक टाइमिंग ने दर्शकों का ध्यान खींचा। इसके बाद 'धमाल', 'डबल धमाल' और 'टोटल धमाल' जैसी फिल्मों ने उन्हें हिंदी सिनेमा के भरोसेमंद कॉमेडी अभिनेताओं में शामिल कर दिया। हालांकि, अरशद हमेशा कहते रहे कि वे सिर्फ कॉमेडी अभिनेता बनकर नहीं रहना चाहते। 'इश्किया' और 'जॉली एलएलबी' में दिखाया अलग रंगः-विशाल भारद्वाज की 'इश्किया' में 'बब्बन' और 'जॉली एलएलबी' में संघर्षरत वकील जगदीश (जॉली) त्यागी के किरदार ने साबित कर दिया कि अरशद सिर्फ हंसाने वाले अभिनेता नहीं हैं। इन फिल्मों में उनके गंभीर अभिनय को समीक्षकों ने सराहा। बाद में उन्होंने कहा कि उन्हें ऐसे किरदार पसंद आते हैं, जिनमें कई परतें हों और अभिनेता के तौर पर कुछ नया करने का मौका मिले। वेब सीरीज 'असुर' से मिली नई पहचानः-2020 में आई वेब सीरीज 'असुर' अरशद वारसी के करियर का बड़ा मोड़ साबित हुई। इसमें उन्होंने फॉरेंसिक विशेषज्ञ धनंजय राजपूत का किरदार निभाया। यह भूमिका उनके पहले के कॉमिक किरदारों से बिल्कुल अलग थी। इस सीरीज के बारे में अरशद ने बताया था- दो वजहों से मैंने 'असुर' की। पहली, इसकी कहानी बेहद शानदार और अप्रत्याशित थी। दूसरी, यह कॉमिक किरदार नहीं था। यह एक गंभीर, जटिल और कई परतों वाला किरदार था, जैसा काम मुझे कम मिलता है।सीरीज की सफलता के बाद दर्शकों ने उन्हें गंभीर अभिनेता के रूप में भी स्वीकार किया। अरशद वारसी मानते हैं कि ओटीटी प्लेटफॉर्म ने उनकी छवि बदलने में बड़ी भूमिका निभाई। वह कहते हैं- मुझे खुशी है कि अब लोग मुझे सिर्फ कॉमेडियन नहीं मानते। मैंने हमेशा अलग-अलग तरह के किरदार करने की कोशिश की और अब लोग उसे पहचान रहे हैं। हाल ही में अरशद वारसी की वेब सीरीज 'प्रीतम एंड पेड्रो' जियो हॉटस्टार पर स्ट्रीम हुई है। उनकी फिल्म वेलकम टू द जंगल सिनेमाघरों में हाल ही रिलीज हुई है। इसके अलावा वह शाहरुख खान की फिल्म 'किंग' और गोलमाल 5 में नजर आएंगे। तीन दशक बाद भी लगातार सक्रियः-करीब तीन दशक लंबे करियर में अरशद वारसी ने 50 से अधिक फिल्मों और कई वेब सीरीज में काम किया है। उन्होंने कभी फिल्मों की संख्या के पीछे भागने के बजाय अपनी पसंद की स्क्रिप्ट को प्राथमिकता दी। अरशद वारसी कहते हैं कि उन्हें कम काम करना मंजूर है, लेकिन ऐसा काम नहीं करना चाहते, जिसमें उन्हें खुद विश्वास न हो। परिवार बना सबसे बड़ी ताकतः-अरशद वारसी की निजी जिंदगी भी बैलेंस रही है। उन्होंने 1999 में मारिया गोरेटी से शादी की। दोनों की मुलाकात डांस के दिनों में हुई थी। अरशद कई मौकों पर कह चुके हैं कि संघर्ष के दिनों से लेकर सफलता तक मारिया ने हमेशा उनका साथ दिया। वे लाइमलाइट से दूर रहकर परिवार के साथ समय बिताना पसंद करते हैं और निजी जीवन को मीडिया की सुर्खियों से अलग रखते हैं।

शादी के बाद जॉब छोड़ दी, अब सिर्फ एक पत्नी और मां हूं, अपनी खुशी भूल गई क्या करूं

नयी दिल्ली। शादी के बाद थोड़ा बहुत जीवन परिवर्तन होना तो स्वाभाविक हैं पर खुद की खुशी ही भूल जाना

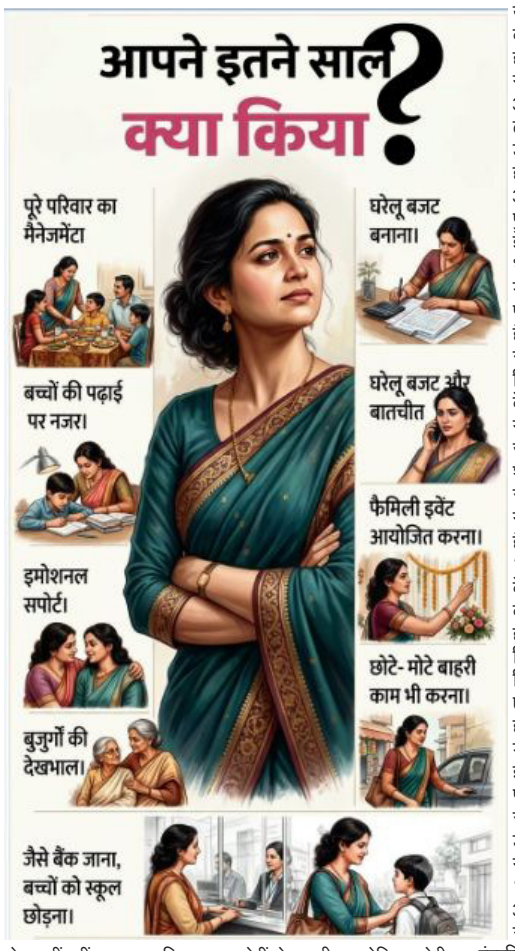

घर एक कंपनी होती या आप इतने साल घर में जो काम कर रही थीं, वही काम किसी कंपनी में कर रही थोड़ा सहीं नहीं माना जाता विषय पर बात करेंगे एक्सपर्ट- डॉ. द्रोण शर्मा, कंसल्टेंट साइकेट्रिस्ट, आयरलैंड, यूके। यूके, आयरिश और जिब्राल्टर मेडिकल काउंसिल के मेंबर जी के साथ और समझेंगे विषय को सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मैं 34 साल की महिला हूं। शादी के बाद मैंने अपनी नौकरी छोड़ दी थी क्योंकि परिवार की जिम्मेदारियां बढ़ गई थीं। पिछले कुछ सालों में मेरी पूरी पहचान एक पत्नी, बहू और मां तक सीमित हो गई है। हाल ही में जब बच्चों ने स्कूल जाना शुरू किया तो मुझे एहसास हुआ कि मेरा जीवन यूं ही निकला जा रहा है। मैंने अपना पूरा जीवन दूसरों को दे दिया है, लेकिन वो तो बड़े होकर चले जाएंगे। फिर मेरा क्या होगा। कभी लगता है कि मुझे दोबारा करियर शुरू करना चाहिए, कभी लगता है कि अब बहुत देर हो चुकी है। डरती हूं कि दूसरों की जरूरतें पूरी करते-करते कहीं अपनी पहचान न खो दूं। क्या यह आइडेंटिटी क्राइसिस है? मैं खुद को दोबारा कैसे खोजूं? जवाब- ये समस्या आपकी अकेले की नहीं है। हजारों महिलाएं जीवन के किसी-न-किसी मोड़ पर ये महसूस करती हैं। वे अच्छी मां हैं, जिम्मेदार पत्नी हैं, परिवार की मजबूत आधारशिला हैं, लेकिन जब बात खुद की आती है तो जवाब धुंधला पड़ जाता है। अक्सर वे इस भावना को किसी से कह भी नहीं पातीं, क्योंकि उन्हें लगता है कि लोग समझेंगे नहीं। लेकिन मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि यह कोई असामान्य अनुभव नहीं है। यह एक डेवलपमेंटल स्टेज है। बच्चे बड़े होने के बाद कई महिलाओं को पहली बार अपने लिए समय मिलता है। ऐसे में अस्तित्व, पहचान और भविष्य को लेकर सवाल उठना लाजिमी है। ये कमजोरी नहीं, बल्कि जीवन की अगली डेवलपमेंटल स्टेज है। यह सिर्फ आइडेंटिटी क्राइसिस नहीं.कई लोग इस स्थिति को केवल आइडेंटिटी क्राइसिस कह देते हैं। लेकिन पूरी तस्वीर इससे कहीं बड़ी है। असल में इसके पीछे बहुत सी भावनाएं होती हैं, जैसेकि- जीवन के नए चरण में प्रवेश। बच्चों का आत्मनिर्भर होना। करियर का लंबा अंतराल। आर्थिक स्वतंत्रता की इच्छा। अपने सपनों की याद आना।समाज में अपनी भूमिका बदलती महसूस होना। यानी यह केवल 'मैं कौन हूं?' का सवाल नहीं है, बल्कि 'अब मेरी अगली भूमिका क्या होगी?' का सवाल भी है। क्या आपने सचमुच कुछ नहीं किया? बहुत-सी महिलाएं कहती हैं, 'मैं तो पिछले 10-15 साल से कुछ करती ही नहीं थी।' यही सबसे बड़ी गलतफहमी है। घर चलाना, बच्चों का पालन-पोषण करना और पूरे परिवार का प्रबंधन करना दुनिया के सबसे कठिन फुल-टाइम कामों में से एक है। फर्क सिर्फ इतना है कि इसके लिए सैलरी नहीं मिलती। आपने इतने साल क्या कियाः- पूरे परिवार का मैनेजमेंट। घरेलू बजट बनाना। बच्चों की पढ़ाई। फैमिली इवेंट आयोजित करना। छोटे-मोटे बाहरी काम करना। बुजुर्गों की देखभाल। काम भी करना। जैसे बैंक जाना, बच्चों को स्कूल छोड़ना। अगर होतीं तो आपकी क्या पोजिशन होती। इसलिए आपसे और सभी महिलाओं से मेरी रिक्वेस्ट है कि खुद को सिर्फ 'हाउसवाइफ' मत कहिए। असल में आप- परिवार की निर्माता हैं। होम मैनेजर हैं। सबका ख्याल रखने, देखभाल करने वाली हैं। परिवार के लिए निर्णय लेने वाली हैं। संकट में सबको संभालने वाली हैं। ये सब कोई छोटी उपलब्धियां नहीं हैं। हमें इन पर गर्व होना चाहिए। फिर भी खालीपन क्यों महसूस होता है? जब बच्चे छोटे होते हैं, तब उन्हें हर वक्त, हरेक काम के लिए आपकी जरूरत होती है। लेकिन जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं तो ये सारे बदलाव आते हैं-वे स्कूल जाते हैं। दोस्त बनाते हैं। खुद फैसले लेते हैं। प्राइवेसी की डिमांड करते हैं। अपने कमरे में अकेले समय बिताते हैं। इतने सालों में तब पहली बार ऐसा होता है कि आपके पास अपने लिए समय बचता है। तब मन पूछता है- 'अब मैं क्या करूं?' 'अब तो किसी को मेरी जरूरत ही नहीं।' क्या 34 की उम्र में नई शुरुआत मुमकिन नहीं? यह सबसे बड़ा मिथ है। 34 की उम्र में कोई देर नहीं हुई होती। एक्सपर्ट मानते हैं कि ये बेस्ट टाइम है। 34 की उम्र में आपके पास वह अनुभव है, जो 24 की उम्र में नहीं था। अब आपके पास ये चीजें नहीं निकलता कि आप कोई नया काम शुरू नहीं कर सकतीं। संगठन और प्रबंधन- मैं एक साथ कई काम संभाल सकती हूं। मैं टाइम मैनेजमेंट अच्छा करती हूं। मैं प्राथमिकताएं तय कर सकती हूं। मैं अचानक आई समस्या का हल निकाल लेती हूं। लोगों के साथ काम- मैं विवाद शांत करा सकती हूं। मैं धैर्यपूर्वक सुनती हूं। मैं लोगों की भावनाएं समझ लेती हूं। मैं फैमिली मेंबर्स के बीच संतुलन बना सकती हूं। नेतृत्व- मैं दूसरों को प्रेरित कर सकती हूं। मैं निर्णय लेने से नहीं डरती। जरूरत पर पूरा जिम्मा खुद ले लेती हूं। सीखने की क्षमता- मुझे नई चीजें सीखना अच्छा लगता है। मैं तकनीक सीखने के लिए तैयार हूं। मैं फीडबैक लेकर खुद को सुधार सकती हूं। आत्मविश्वास- मैं दोबारा काम सीख सकती हूं। मैं नई शुरुआत के लिए तैयार हूं। आपके स्किल्स क्या हैं? जॉब के लिए जिन भी स्किल्स की जरूरत होती है, घर संभालते हुए आपने वो स्किल्स पहले ही सीख लिए हैं, जैसेकि- प्रोजेक्ट मैनेजमेंट, टाइम मैनेजमेंट, बजट मैनेजमेंट, नेगोशिएशन, क्राइसिस मैनेजमेंट, लीडरशिप, इमोशनल इंटेलीजेंस, प्रॉब्लम सॉल्विंग, टीम कोऑर्डिनेशन इवेंट प्लानिंग एडमिनिस्ट्रेशन। करियर ब्रेक से आपका टैलेंट और क्षमता खत्म नहीं हो जाते। कई बार गृहणियों के पास संगठन, धैर्य और नेतृत्व जैसी क्षमताएं कॉर्पोरेट कर्मचारियों से भी बेहतर होती हैं। जरूरत सिर्फ उन्हें पहचानने और नए संदर्भ में पेश करने की है। चार हफ्तों का 'कमबैक' प्लान- सप्ताह 1 खुद को दोबारा पहचानिए। अपनी सभी डिग्रियां निकालिए। पुराने अनुभव एक डायरी में लिखिए। घर की जिम्मेदारियों की सूची बनाइए। रोज 20 मिनट लिखिए– 'मुझे क्या पसंद है?' तीन लोगों से अपनी ताकत पूछिए। सप्ताह 2- करियर तलाशिए, पांच संभावित क्षेत्रों की सूची बनाइए। एक ऑनलाइन कोर्स शुरू कीजिए।अपना सीवी तैयार कीजिए। लिंकडेन में अपना प्रोफाइल बनाइए। दो पेशेवर लोगों से बात कीजिए। सप्ताह 3-वर्क कल्चर में वापसी, सीधे फुल-टाइम नौकरी करना जरूरी नहीं। किसी पार्ट टाइम काम से शुरुआत करिए। पहले खुद को नए माहौल में सहज बनाइए। सप्ताह में 1-2 दिन वॉलंटियर करिए। समय पर पहुंचने का अभ्यास करिए। टीम के साथ काम करने का अभ्यास करिए। अपनी नई उपलब्धियों को डायरी में लिखिए। सप्ताह 4-नौकरी की शुरुआत रोज दो आवेदन भेजिए। इंटरव्यू की तैयारी करिए। अपना सीवी अपडेट करिए। पार्ट-टाइम ऑफर भी एक्सेप्ट करिए। हर हफ्ते अपनी प्रोग्रेस चेक करिए। याद रखिए– पहली नौकरी मंजिल नहीं होती, अगले अवसर का दरवाजा होती है। रोज खुद से कहें ये 7 बातेंः-इन सारी तैयारियों के साथ ये समझना भी जरूरी है कि आपका अपने साथ संवाद कैसा है। खुद से पॉजिटिव बातें करिए और रोज खुद को ये 7 बातें याद दिलाइए-रोज खुद से कहें ये 7 बातेंः- मैं सिर्फ किसी की पत्नी नहीं हूं। मैं सिर्फ किसी की मां नहीं हूं। मैं सिर्फ एक सक्षम व्यक्ति हूं। मैं सीख सकती हूं। मैं फिर से शुरू कर सकती हूं। मेरा अनुभव मेरी ताकत है। प्रोफेशनल हेल्प कब जरूरी? वैसे तो आपकी प्रॉब्लम सेल्फ हेल्प से आसानी से दूर हो सकती है। लेकिन कभी भी अगर उदासी, अकेलापन ज्यादा बढ़े और उसका असर भोजन, नींद पर पड़े तो प्रोफेशनल हेल्प लेने में हिचकना नहीं चाहिए। प्रोफेशनल हेल्प कब जरूरी-यदि कई सप्ताह तक लगातार- उदासी बनी रहे। किसी काम में मन न लगे। रोजमर्रा के काम प्रभावित हों। आत्मसम्मान बहुत कम हो जाए। सेल्फ हार्म का ख्याल आए। हर समय एंजाइटी रहे। अंतिम बातः- आपने सालों तक पूरे परिवार को संभाला और अपना व्यक्तित्व नहीं खोया। आज परिस्थितियां बदल रही हैं। बच्चे बड़े हो रहे हैं। जिम्मेदारियां बदल रही हैं। अब आपके जीवन का अगला और नया अध्याय शुरू हो रहा है। इस अध्याय को भी आप बहुत खूबसूरती से गढ़ेंगी। याद रखिए, आप पीछे नहीं लौट रहीं, बल्कि आगे बढ़ रही हैं।

स्वत्वाधिकारी
एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स
53/25/1 ए बेली रोड
न्यू कटरा प्रयागराज
(उ.प्र) 211002 से
मुद्रित एवं सी-41यूपी
एसआईडीसी औद्योगिक
क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक
डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।